5.1.2 Sanskriti Setu : Folk Song Preservation and Inter-State Cultural Understanding

Music Department collected traditional folk songs from Barotiwala villages to preserve culture, connect youth, and foster cross-cultural understanding among students. Students documented endangered folk songs, connected with villagers, promoted cross-cultural understanding, preserved heritage, and encouraged pride in diverse cultural identities.

करियाला

लोक मान्यता के अनुसार देवताओं के आग्रह पर नटराज शिव ने अपने प्रिय शिष्य ताण्डु से भरतमुनि के सौ पुत्रों और गंधर्वों को ताण्डव नृत्य की शिक्षा दिलाई। शिव की पत्नी पार्वती ने लास्य नृत्य (वाद्य और गीतों के संयोग से - महिला नृत्य) सर्वप्रथम बाणासुर की पुत्री और अनिरुद्ध की अर्धांगिनी ऊषा को सिखाया। ऊषा ने यह कला द्वारिका की गोपियों को सिखाई। धीरे-धीरे यह कला सम्पूर्ण पृथ्वी में फैल गई। इसी से हिमाचल प्रदेश में अनेक लोक नाट्य - रली-पूजन, ठुण्डु, देवता का खेल, ठोडा, करयाला, स्वांग, चंदरौली, बरलाज व जगराता, सिठणी, रामलीला, कुंदैन, हरणातर और धाज्जा आदि लोक नाट्य विधाओं का जन्म हुआ। लोकनाट्य ने लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया।

करियाला की शुरुआत

लोकमानस के हास्य व मनोरंजन की सबसे अहम विधा लोक-नाट्य करयाला है। करयाला किसी भी समय का लोकनाट्य है और यह वर्ष भर चलता रहता है, परंतु इसके प्रदर्शन का असली समय शरद ऋतु मानी जाती है। वास्तव में करियाला दिवाली से आरम्भ होता है। इन दिनों वर्ष भर के कड़े परिश्रम के बाद कृषक अपने खेतों और खलिहानों से निवृत्त हो जाते हैं, और उन्हें मनोरंजन की लालसा रहती है। जनमानस इस लालसा की पूर्ति करियालची बड़ी सफलता से करते हैं। करयाले में दर्शकों के मनोरंजन के लिए संवाद प्रस्तुत करते हुए किसी प्रकार के शब्दों का बंधन नहीं होता। करयाला के लिए किसी विशेष मंच की आवश्यकता नहीं होती। यह प्रकृति के खुले प्रांगण का

लोकनाट्य है और यह रात के समय ही खेला जाता है।

करियाला का मनोरंजन की तैयारी

करियाला खुले प्रांगण में मनाया जाता है। प्रांगण के चारों ओर छोटे-छोटे खम्भे खड़े करके उसमें रस्सी बांधकर एक चौकोर वर्ग बना लिया जाता है। एक लकड़ी के डंडे से गोल रेखा खींची जाती है। जिसके बाहर चारों तरफ दर्शक खड़े होते हैं। इसके साथ ही कुछ दूरी पर करियालचियों की तैयारी के लिए दो-तीन चादरें तानकर एक छोटा तम्बू (कमरा) बना होता है जहां पर करियालची अपना शृंगार करते हैं। रस्सियों से घिरा चौकोर स्थान ही मंच होता है। जिसे खाड़ा (अखाड़ा) कहा जाता है। इसके पास ही घयाना (आग, धूनी) जलाई जाती है। इस आग को पवित्र माना जाता है। अखाड़े के एक ओर वादक बैठ जाते हैं। करयालचियों के वाद्ययंत्र - करनाल, रणसिंघा, चिमटा, नगारा, शहनाई, बांसुरी, ढोलक, खंजरी आदि।

जंगताल से शुरू करियाला

करियाला जंगताल से आरंभ होता है। इसकी मधुर तान दर्शकों के लिए निमंत्रण की घड़ी होती है। बजंतरी अपने संगीत से दर्शकों का स्वागत करते हैं। इसे बधाई ताल भी कहा जाता है। परिमार्जित भाषा में इसे मंगलगान भी कहा जा सकता है।

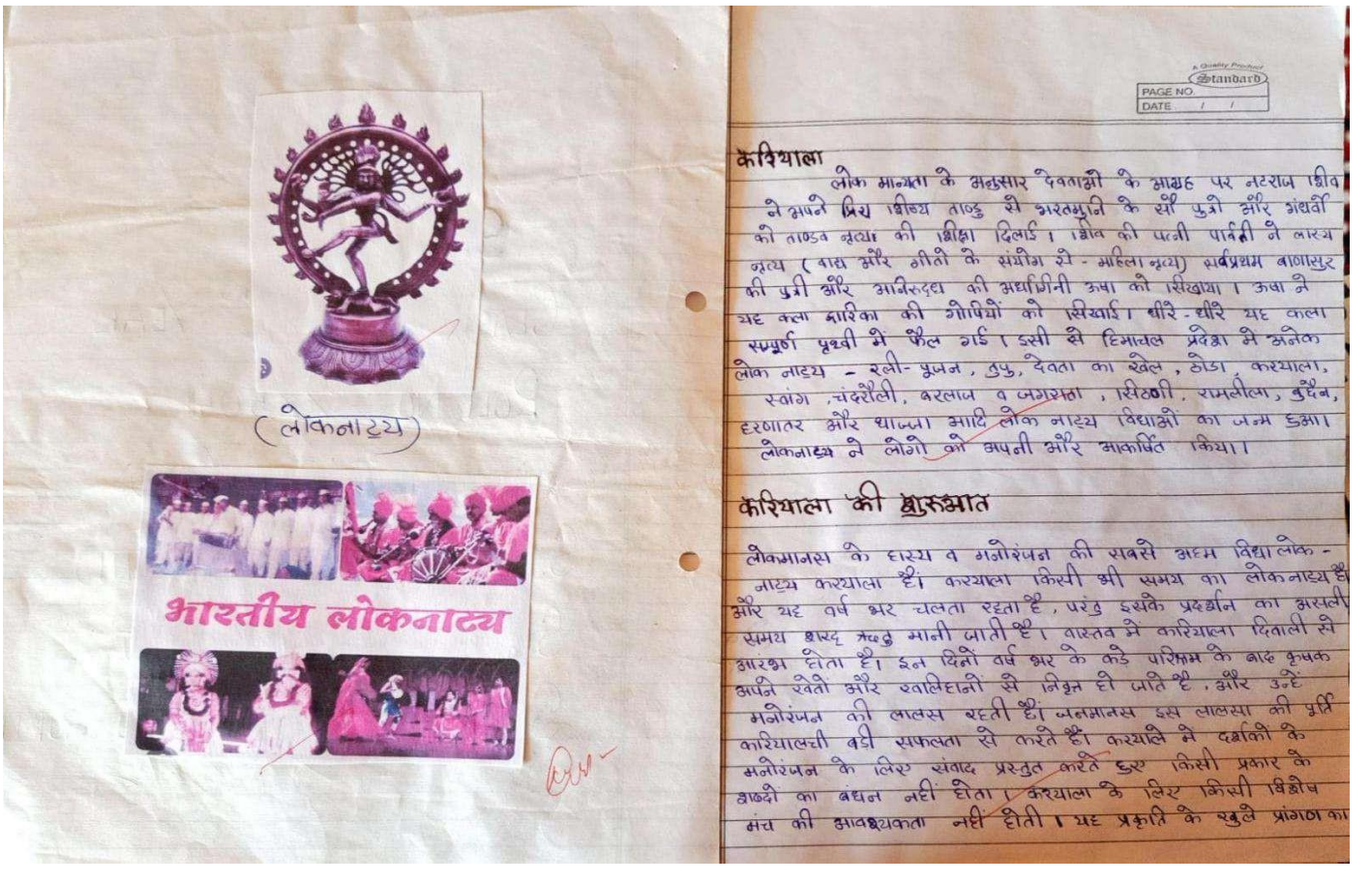

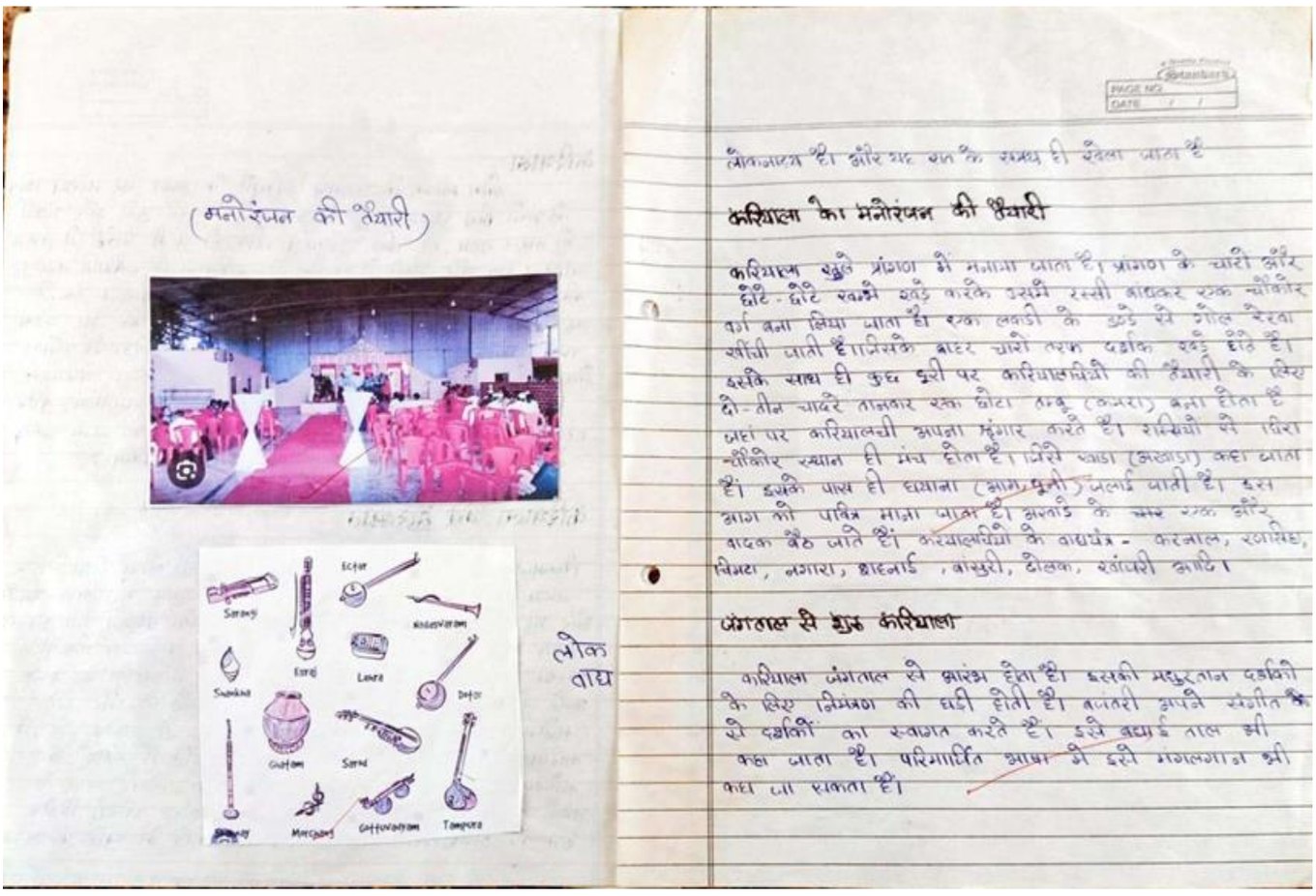

(चंद्रावली)

मंच पर चंद्रावली का प्रवेश

बधाई ताल के बजते ही चंद्रावली लक्ष्मी के रूप मे हाथ मे जले हुए धूप- दीप थाली मे लिए हुए अखाड़े मे प्रवेश करती है। पुरुष कलाकार ही स्त्रियो की वेश-भूषा मे चंद्रावली बनता है। चंद्रावली मंच पर आते ही एक हाथ आकाश की ओर करके सरस्वती का आह्वान करते हुए वाद यंत्रो को छूती है। अखाड़े की परिक्रमा करती है तथा वाद्य यंत्रो एवं दर्शको के ऊपर जलते धूप का पात्र घुमाकर कार्यक्रम का शुभारंभ करती है। उसके बाद घयाने (आग) के चारो ओर चंद्रावली करियाले की ताल पर नृत्य करती है। उसका नृत्य केवल दस मिनट तक चलता है उसके बाद मशालो या दीपो को जलाया जाता है। जिसे अखाड़ा बांधना कहा जाता है। पूजा के वक्त जिस आरती गाई जाती है

जय जय कारी हे विष्णु
हे देव विष्णु छप छप पाति राजा देवा
कानै रे कायदा है तेरा करयाला
देव तेरे नांव रा करयाला कबूल कर
पे बोल ऐसा रे बेटे री ब्याह रा था
देवा ऐसा रा बोल दिखे
पिछला बोल था अग्गे रखा रख माराज
जिथे तक याद करे जिंदगी
सही होवे।

(स्वांग)

(काली माँ)

चंद्रावली विभिन्न पहाड़ी धुनो पर नृत्य करने के पश्चात वापस शृंगार कक्ष मे चली जाती है। चंद्रावली के बाद जनमानस के हास्य मनोरंजन के लिए स्वांग, छोटे स्वांग शुरु होते है। स्वांग की कोई अवधि नहीं होती। ये भिन्न- भिन्न प्रकार के होते है- साधु का स्वांग, साहब-मैम का स्वांग, जोगी-जोगन का स्वांग, बुद्धु का स्वांग आदि। छोटे स्वांगो मे लम्बरदार का स्वांग सबसे मनोरंजनपूर्ण होता है। लम्बरदार गांव मे रियासत का स्वस्व प्रतिनिधि होता है। जिसका मुख्य कार्य राजस्व वसूलना होता है। वह छोटे-मोटे कार्य भी निपटाता था। अंत मे यह स्वांग व्यंग्य विनोद के साथ सामाजिक बुराइयों पर कटाक्ष करते हुए समाप्त होता है।

करियाला मे गाए जाने वाले भजन

∴ काली माता का भजन

मेरी माँ के लंबे बाल परांदा लंबा लाइयो,॥
परांदा लंबा लाइयो, परांदा लंबा लाइयो ॥

मेरी माँ के लंबे बाल परांदा लंबा लाइयो॥

सखी, दूर देश मे जाइयो, मेरी माँ की बिंदिया लाइयो ॥
बिंदिया का रंग हो लाल, बिंदिया तो लाल ही लाइयो ॥

मेरी माँ के लंबे बाल परांदा लंबा लाइयो ॥

(स्वांग)

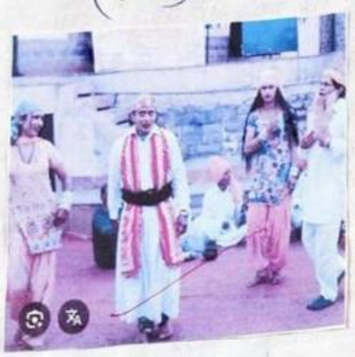

यह गीत मेरी मम्मी (सलित्रा) के द्वारा लिखा गया है

सखी दूर देश मे जाइयो, मेरी माँ की चूड़ी लाइयो ॥
चूड़ी का रंग हो लाल, चूड़ी तो लाल ही लाइयो ॥

मेरी माँ के लंबे बाल परांदा लंबा लाइयो ॥

सखी दूर देश मे जाइयो, मेरी माँ की पायल लाइयो ॥
पायल का रंग हो लाल, पायल तो लाल ही लाइयो ॥

मेरी माँ के लंबे बाल परांदा लंबा लाइयो ॥

सखी दूर देश मे जाइयो, मेरी माँ की चुनरी लाइयो ॥
चुनरी का रंग हो लाल, चुनरी तो लाल ही लाइयो ॥

मेरी माँ के लंबे बाल परांदा लंबा लाइयो ॥

करियाला लोकनाट्य (स्वांग)

स्वांग - लोकनाट्यो मे प्रहणात्मक, संगीत नृत्य एवं अभिनय प्रधान नाट्यो 'स्वांग' का नाम दिया गया है। स्वांग का सामान्य अर्थ है। 'रूप धारण करना' ये ग्रामीण मनोरंजन है। हास्य व श्रृंगार की वृद्धि करना इस कला का लक्ष्य है मूल मे स्वांग का अर्थ नकल करना ही है जब अभिनेता किसी अन्य प्राणी का रूप धारण कर उसकी नकल उतारता है, उसे स्वांग कहते है।

(प्रहसनात्मक स्वांग)

(पाखंडी तापस)

पाचणी स्वांग

स्वांग परंपरा - लोक धर्मी नाट्यो को स्वांग कहा जाता है जिनका लक्ष्य मनोरंजन करना होता था। ये धार्मिक अनुष्ठानो एवं बंधनो से मुक्त रहने के कारण जन-मन की सहज अभिव्यक्ति के साधन थे।

स्वांग

(1) प्रहसनात्मक स्वांग - इनमे पाखंडी तापस, भिक्षु व व दुराचारियो की वेश-भूषा व चेष्टाओं की नकल की जाती है इससे सामान्य लोगो में प्रचलित किसी दुराचार पाखंड का प्रदर्शन अनिवार्यत: होता है-

साधु री नगरी, बसे न कोये,
जो बसे तो साधु होये।

(2) वैवाहिक संस्कारों से जुड़े स्वांग - जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी संस्कार मान्यत: है विवाह जैसे मांगलिक अवसर पर स्त्रियां, नृत्य, गाना व स्वांगो द्वारा मनोरंजन करती है-

बड़े जिन्हा रे घर तां, रंगलियां बैठवा,
उन्हा रे ब्याहणे, लाणे जाणा वे।

(3) पाचणी स्वांग - स्वांग में लोक नाट्यो मे नृत्य व लोकगीतो की ही योजना होती है। उपस्थित लोगो की माँग के अनुसार भी गीत गाए जाते है-

(गारड)

जै जै जननी ज्वालामुखी खूब रचाई खेल,
इक स्वांग श्री (व्यक्ति का नाम) जी के,
थिया इनकी बधाई बेल।

5. गारड स्वांग- यह झलक ग्रामीण जीवन से सबंधित है। इसमें ग्रामीण लोगो के व्यवहारी एंव क्रिया-कलापो को प्रस्तुत किया गया है गारड वन का आधिकारी होता है वे पेड़ पौधो की रक्षा करता है-

पंज मगी दस्स देणे भो गारडा।
तू म्हारी रपोट देख्यां देडा।

स्वांग लोकजीवन का प्रतिनिधि नाट्य रुप माना जा सकता है। इसमें सामाजिक सांस्कृतिक व धार्मिक मान्यताओं को स्वाभाविक रुप मैं प्रस्तुत किया जाता है।

चिट्ठी रसम

इस रसम में शादी से कुछ दिन पहले लड़की वाले लड़के वालो को लगन पत्रिका, नारियल की डुड़ियां, बदाम-काजु इत्यादि भेजते है। जब चिट्ठी भेजी जाती है। तब गांवो की औरत आकर लड़की वालों के घर अपने लोकगीत गाती है। लड़के वालो के घर उनके गांवो की औरत आकर गीत गाती है। जब चिट्ठी भेजी जाती है तब से यह माना जाता है कि शादी की शुरुआत हो चुकी है। सभी तैयारियों में जुट जाते है।

चिट्ठी रसम पर गाए जाने वाले लोकगीत-

1 डेगा दे पात आज पीले जे होए
लाडो दा बाबल आज हीना जा होए।
डेगा दे पात आज पीले जे होए
लाडो दा वीरा आज हीना जा होए।
डेगा दे पात आज पीले जे होए
लाडो दी माता आज हीना जी होए। (श्री मति संतोष देवी)

2. निकी- निकी कणि मी बरसे
हरे-हरे जो तेरी कोडी चुके
बाबल जे तरमी तेरी जन चढ़े
माता सुहागन तेरे शगन करे।
नदिया दा रेत सातो गणया नी जांदा
वीरे आला देग सातो राड्या नी जांदा (श्री मति संतोष देवी)

Date: __/__/__
Page No.: ____

वटना रसम

वटना रसम में लड़की या लड़के के घर वाले, रिश्तेदार और गांवों वाले बाले इकट्ठे होते हैं। गांव की औरते और रिश्तेदार लड़की / लड़के के लिए हल्दी पिसती है। और गीत गाती हैं। पंडित जी को भी बुलाया जाता हैं। पंडित जी के आदेश के मुताबिक सब रसम शुद्ध किया जाता है। फिर लड़की / लड़के की माता लड़के / लड़की को वटना लगाती हैं। आखों में सुरमा (काजल) डालती है। मांग में तेल लगाया जाता है। फिर बाकी के रिश्तेदार लड़की / लड़के को वटना लगाते हैं।

वटना रसम में गाए जाने वाले लोकगीत

वटना माल नी कवारिये गुढ़ा रंग वटने दा
अपने बाबल नु पयारी गुढ़ा रंग वटने दा।
वटना माल नी कवारिये गुढ़ा रंग वटने दा
अपनी माता नु प्यारी गुढ़ा रंग वटने दा।
वटना माल नी कवारिये गुड़ा रंग वटने दा
अपने दादी नु प्यारी गुढ़ा रंग वटने दा।
(श्री मति संतोष देवी)

Date: __/__/__
Page No.: ____

मेहंदी रसम

मेहंदी रसम में गांव की औरतें और रिश्तेदार इकट्ठा होकर लड़की / लड़के को मेहंदी लगाते हैं। और गीत गाते हैं। बाकी सब तैयारी में लगे हुए होते हैं। घर की सजावट की जाती हैं। लाइटें लगाई जाती हैं। पूरे गांव में शादी वाला घर ही चमक रहा होता है। रात को घर में मेहंदी के गीत गुंजते हैं।

मेहंदी रसम में गाए जाने वाले लोकगीत –

मेहंदी नी मेहंदी
मेहंदी नी मेहंदी
आप रल के लावन आईयां
पेना ते परजाईयां
अम्बे दा बुटा वेडे लावे
माली गेरा दी चोली पावे
तेनु आप सजावन आईया नी
पेना ते परजाईयां
मेहदी नी मेहदी
मेहंदी नी मेहदी
आप रल के लावन आईया
पेना ते परजाईयां (श्री मति अमरजीत देवी)

Date: / /
Page No.:

नानका मिलनी

मेंहदी रसम के अगले दिन नानका मिलनी की जाती है। लड़की / लड़के के नानके सभी गांवो वालो को साथ लेकर और कुछ वस्तुए जैसे कपड़े, गहने, इत्यादि लड़की/लड़के के लिए लाते हैं। नानका मिलनी में लड़के / लड़की के घरवाले और गांव वाले की औरते लड़के / लड़की की नानका परिवार को मिलते हैं।

नानका मिलनी पर गाए जाने वाले लोकगीत

जब नानका शादी वाले घर पंहुचते है तब ये गीत गाते है।

पीढ़ी गली क्यों रखी है नाथ
ढुंगे ढुंगे टोए
डिग डिग पैंदे
निके ना रोओ पाई निके ना रोओ। (श्रीमति नीता देवी)

जब नानका परिवार से मिलने लड़का / लड़की के घरवाले आते है तब ये गीत गाया जाता है।

वे वारखती आई नी नानकेओ
किधे के हो गया कुवेरा
लाडो दी रवोगी मामी वे
टोलदी नु होगया सवेरा (श्री मति नीता देवी)

जब दोनो आपस में मिलते तब यह गीत गाते है।

साडी कोल दी ओ माया वे, मोंगी कुड़ी गेलना मिलवे
इदे माण माण जुआं सवा माण लिखा
मोंगी कुड़ी नु ना मिल वे। (श्री मति नीता देवी)

Teacher's Sign.

Date: / /
Page No.:

उसके बाद मामा जी की मिलनी लड़की / लड़के के पिता के साथ की जाती है। लड़की / लड़के के परिवार वाले मामा जी को कुछ वस्तुएं देते हैं और साथ ही में नानके वालो को शगन देते है। नानके वाले भी शादी वाले घर को शगन देते है। जब मामा जी के साथ लड़की / लड़के को बिठाया जाता है और कुछ रसमे मामा जी के साथ निभाई जाती है। वह सांत कहलाती है। तब यह गीत गाया जाता है।

1) शांति बेजा ओ मामा
पाईया नु ले बैठी नाल
शांति बेजा ओ नाथ
पैसा न ले बैठी नाल (श्री मति अमरजीत देवी)

2) मामा बैठ्या सांत करावण
मणेया उदा टबर नी
नाथ बैठ्या सांत करावण
रूठैया उदा टबर जी। (श्री मति अमरजीत देवी)

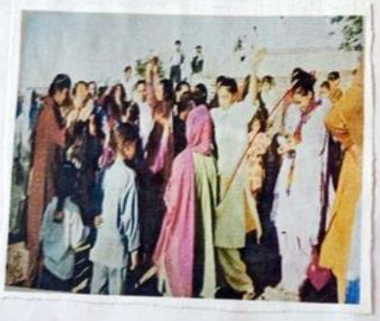

जागो रसम

जागो रसम में नानका परिवार लड़की, लड़के के परिवार के साथ गांव में जाकर ~~सबको~~ सबके घरों में नाचते है। गीत गाते है। और उन्हें जगाते है। जागो एक ~~ब~~ सजाया हुआ मटके जैसा होता है और उसके साथ एक सजाया हुआ डंडा होता है। जागों में गाए जाने वाले गीत -

गंवाड़ियों जाग दे कसुते
गंवाड़ियों जाग दे कसुते
मुंडे दी ~~भ्ली~~ चाची नु लेगे कुते
गंवाड़ियों जाग दे कसते
मुंडे दी ताया नु लेगे कुत्ते
गंवाड़ियों जाग दे कसुते (श्री मति संतोष देवी)

दरवावा - जागों के बाद दरवावा दिखाया जाता इसमें कपडे, गहने इत्यादि गांव वालो को दिखाया जाता है। दरवावे पर गाया जान्ना जाने वाला गीत -

~~साले~~ सयाले का सर गया माया
सयाले का सर गया --
सथे गेल लाले माया
सथे गेल लाले --
~~मोनी~~ नु दे दे ~~माया~~
मोनी नु दे दे
मामी ने देया माया
पेटी मा रख ले। (श्री मति संतोष देवी)

Teacher's Sign.

बरात रसम

बरात रसम मे वर वधु के घर सभी पुरुषो को लेकर आता है। साथ में बैंड बाजा भी लाते है। बरात में लड़की के घर वाले सभी का अच्छे से स्वागत करते है। और लड़की की बहने ~~का~~ स्वागत के लिए दरवाजे पर खड़ी हो जाती है। फिर वर आता है। और अंदर जाने के लिए उन्हें शगन देता है। थोड़ी सी ~~बी~~ खट्टी-मीठी उनमें नोक झोक होती है। फिर वह अंदर आ जाते है। फिर सभी बरातियों की सेवा की जाती है। उन्हें खाना खिलाया जाता है। और फिर वर फेरे के लिए बैठ जाता है।

Teacher's Sign.

Date: / /
Page No.:

फेरे रसम

इस रसम में वर वधु के घर सभी पुरुषो को लेकर आता है फेरे रसम में लड़की और लड़के यानी वर और वधु के सात फेरे करवाए जाते है। और फिर वधु की मांग में वर सिंदुर डालता है। फिर मंगलसुत्र डाला जाता है।
फेरे पर गाए जाने वाले गीत।

निकी जी सुई रेशम दा धागा
बाबल मेरे ने काज रचाया
मा मेरी ने दाज बचाया सजाया।
आदे जादे राही भी पुछदे
तु बीबी क्यों रो रही वे
बाबल मेरे ने काज रचाया
मैं परदेसन हो रही वे।
मां मेरी ने दाज सजाया
मैं परदेसन हो रही वे। (श्री मति नीता देवी)

Date: / /
Page No.:

विदाई रसम

विदाई रसम में जब लड़की अपना मायका छोड कर जा रही होती है तब उसके के सामने चावल और खील की परात रखी जाती है। फिर वह जैसे कदम बढ़ाती है। तब उसके हाथ में चावल और खील दी जाती है। और वह अपने पीछे की ओर गिराती है। पीछे उसके परिवार वाले अपनी चुन्नी में उस दाने को भर लेते है। यह बड़ा दुखनुमा माहोल होता है। फिर लड़की अपने परिवार वालों को मिलती है। और रोती है। फिर उसे गाड़ी में बिठाया जाता है। आगे तेल गिराया जाता है। पीछे पैसे सिक्के के पैसे गिराया जाता है। और फिर चली लड़की अपने ससुराल के लिए रवाना हो जाती है। तब बड़ा दुख भरा माहोल होता है। जब लड़की विदा होती है तब यह लोकगीत गाया जाता है।
तेरे महला वीच वीच वे बाबल
मेरा डोला अडेया
इन महला नु ढोऊ पटा तिये
कर जा अपने।
तेरी महला वीच वीच वीर मेरा डोला अडेया
इन महला नु ढोऊ पटा लिये पैने
कर जा अपने (श्री मति नीता देवी)

साडी वेद पर की टाप गई सोने दी चीड़ी साड़ी पेद पर की टाप गई नाप की बोबो इक वाग विच पंछी बोले पाई तीयां नारखयो कोई। (श्री मति नीता देवी)

Teacher's Sign.

दुल्हन स्वागत

जब वधु अपने घर से विदा होती है और ससुराल पहुंचती है। तब वहां के लोग उसका स्वागत करते है। ~~वधू~~ की ~~सास~~ लड़के की मां ~~का~~ अपनी वधू को और बेटे के सिर से पानी वारती है। और फिर उसे पीती है। फिर कलश रखा जाता है। वधु उसे अपने दाहिने पैर से गिराती है। ~~फिर~~ फिर घर में प्रवेश करती है।

जब वर अपनी वधू को घर लाता है तब यह गीत गाया जाता है।

~~के~~ मोगरी पर मोगरी
खाड़ा वीरा यह लेया या चोखी
कंगने पर कँगने पर कंगना
असी दुआ वीरा भी उथी मँगना।
(श्री मति अमरजीत देवी)

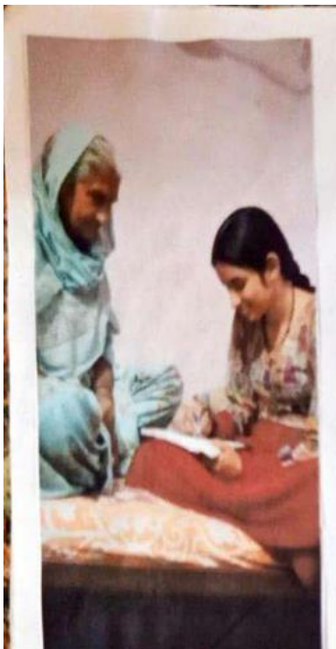

श्री मति नीता देवी

श्री मति संतोष देवी

श्री मति अमरजीत देवी

इस प्रकार सभी रसमों रिवाजों को निभा कर शादी रचाई जाती है। शादी में मुख्य रूप से लोक संगीत का बड़ा महत्व है। सभी अपने रिवाजों के हिसाब से अपने भावों को गीत के रूप में प्रकट करते हैं। इससे उस रसम का महोल उत्पन्न हो जाता है। और शादी में रौनक ही रौनक लगी रहती है। संगीत सबसे किसी न किसी तरह जुड़ा हुआ है। सब अपने भावों को संगीत द्वारा प्रकट करते हैं। भारतीय संस्कृति लोकगीत से जुड़ी हुई है।

श्री मति संतोष देवी -

श्री मति अमरजीत देवी -

श्री मति नीता देवी -

Topic ______ Date ______

जब सभी लड़कियाँ घर-घर जाकर पैसे मांगती है परन्तु गा या नाचकर लोगों के सामान प्रस्तुत करती है यह मिट्टी से बना होते है और इनके अन्दर मिट्टी के दिए रखे होते है और वह तेल के भरे होते है। और उनमें बाती लगी होती है। और उन्हें जलाया जाता है उनकी रोशनी में ही सभी लड़कियां रात में घर-घर जाती है। और उन दियों को कनक या मुक्का के दाना के ऊपर रखा जाता है दिया को ताकी वह दिए ना गिरे और जलते रहे।

लोक गीत

लड़की द्वारा गाए जाने वाले लोक गीत :

1. चनन मनन दि रात के नचे मेरा गड़बड़ी, पूर्णमासी रात के नचे मेरा गड़बड़ीयां ॥

जब सभी लड़कीयाँ इस गीत को गाती है तो सभी लोगों को पता चल जाता है कि गड़बड़ीयां लेकर लड़कियां आई है। फिर सभी लड़कियां घर-घर जाकर गिद्दा डालती है।

2. मैं अंग्रेजी पड़ी लिखी मेरे करम फुट गए मम्मी जी। मम्मी जी ने कहा बहु झाड़ू लगादो मेरी आ

गड़बड़े लेकर घर-घर जाते बच्चे

Date ______

में धुल पड़ गई मैं तो मर गई मम्मी जी। मैं अंग्रेजी पड़ी लिखी मेरे करम फुट गए मम्मी जी।

3. डोले डोल जाई ना किसे दि मूली, घड़ी ना किसे दि गाजर घड़ी जा तेरे ते मेरा पल्ला, पल्ला, पल्ला।

4. गुड्डे-गुड़ीले वालया ढोली-ढोली बोले मेरे दोहे कना च बालियाँ मेरे दिल बिच पैन्दा ढोल। मेरा माही गड़बा मैं गड़बे दी डोर।

5. फुला वाली टोकरी सतारयां वाली रात गड़बड़ा मेरा कन्दा नचा मैं सारी रात।

6. कूला घघरा सिलाई के हाँ सिलाई के तौबड़ पानीयाँ नु चली आ तेरी सौ तौबड़ पानीयां नु चली आ तेरी सौ।

7. गिदे बिच मैं नचा सुरज जी मथा के पजाबना बनके जाद आई पटयाला खाड़के देखदा।

8. सौर नचीया दरानीयां जठानियां एक दाव पैना नचीयां। सौर नचीयां दरानीयां जठानियां।

गड़बड़े लेकर घर-घर जाते बच्चे

Date

2. मैं घुल पड़ गई मैं तो मर गई मम्मी जी। मैं अम्तजी पड़ी लिखी मेरे करम फुट गए मम्मी जी।

3. डूल डाल जाईना किसे दि मूली घड़ीना किस दि गाजर घड़ी जा तर ते मेरा पल्ला, पल्ला, पल्ला।

4. गुड्ड-गुड्डीले वालया होली-होली बोल मर दोहे कना च बालियाँ मेरे दिल बिच पैन्दा होल। मेरा माही गड़वा मैं गड़वे दी डोर।

5. फुला वाली टोकरी सतारयां वाली रात गड़वडा मेरा कन्दा नचा मैं सारी रात।

6. कूला घघरा स्लिाई के हाँ सिलाई के तोबड़ पानीयाँ नु चली आ तरी सो तोबड़ पानीयाँ नु चली आ तरी सो।

7. गिदे विच मैं नचा सुरज जी मया के दे पुजावना बनके जाद आई पटयाला खाड़के देखदा।

8. सोरे नूचीया दरानीयाँ जेठानियाँ पूके देव पैना नूचीया। सोघू नूचीयाँ दरानीयाँ जेठानियाँ।

गड़बड़े जलाते हुए बच्चे

Topic ____________ Date ________

समाप्ती

जब पाँच से सात दिन पूरे हो जाते हैं तब सात दिन बाद पूरे गाँवों के लोगों को खेतों या गलियों में इकट्ठा करके सभी के घरों में से गड़बड़े लाकर लकड़ियाँ और सूखे घास को इकट्ठा करके आग जलाते हैं और उस आग में एक बड़ा पत्थर रखते हैं ताकि जब हम उन मिट्टी के गड़बड़ों को फेंके तो वह फूट जाए। उन गड़बड़ों को लेकर 7-7 गड़बड़ों का जोड़ा बनाकर उन्हें आग के सात फेरे दिलाए जाते हैं उसके बाद उन्हें आग में डाला जाता है। ऐसे ही सभी गाँव के लोग गड़बड़ों को खत्म करते हैं और बाद में जितने भी लोग वहाँ होते हैं उन्हें खाने के लिए मिठाई, टॉफियाँ आदि दिया जाता है। यह खाने का सारा सामान जो भी 7 दिन तक लड़कियों को गाँव वाले देते हैं उन पैसों को इकट्ठा करके लाते हैं। इस प्रकार इस त्योहार को मनाया जाता है।

Love

गड़बड़े

Topic ____________ Date ________

मान्यता

गड़बड़े का त्योहार, शरद पूर्णिमा की रात को मनाया जाता है। यह त्योहार दिवाली से कुछ दिन पहले आता है। हिंदू धर्म में शरद पूर्णिमा की चाँदनी को बहुत शुद्ध माना जाता है, इसलिए लोग इस रात गड़बड़े का त्योहार मनाते हुए चाँदनी की पूजा करते हैं।

जन्म गीत

भारतीय संस्कृति ने मातृत्व को पूर्णता महत्व में मानी गई, अतः नारी के लिए मां बनने का अवसर अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं हर्ष का होता है। पुत्र जन्म के अवसर पर जो लोकगीत गाए जाते हैं, उन्हें स्थानीय बोली में 'रण झुंजणी' कहा जाता है। 'रण-झुंजणे' का अर्थ 'रण में जूझने' से लिया जाता है अभिप्राय यह है कि पुत्र बड़ा होकर पराक्रमी एवं साहसी होगा। जन्म गीत प्रस्तुत है

पुतर होलरा वे तेरी नानी ने की सुणया,
औ ला नच्च-दी भी आई
औ ला कूद-दी भी आई
अग्गे ढोल पीछे शहनाईयाँ,
पुतर होलरा वे तेनू लाख-लाख बधाईयाँ .....

पुतर होलरा वे तेरी नानी ने की सुण
औ ला नच्च-दी भी आई
औ ला कूद-दी भी आई
अग्गे ढोल पीछे शहनाईयाँ,
पुतर होलरा वे तेनू लाख-लाख ब

Teacher's Signature

बिहाइयाँ — हिमाचल प्रदेश में जन्म तथा विवाह संबंधी लोकगीत अधिक प्रचलित हैं। जन्म, नामकरण, मुंडन आदि संस्कारों के समय गाए जाने वाले गीतों को बिहाइयाँ कहते हैं

नीचे दिए गए गाने (बिहाइयाँ) नामकरण का गाना है घरवाले और अन्य रिश्तेदार इसमें पूरा सहयोग देते हैं। नानी घर की ओर से नवजात शिशु को उपहार देने की परंपरा लोक प्रसिद्ध है। इस गीत मे नानी बच्चे के नामकरण मे आई थी और उससे पूछते हैं कि बच्चे के लिए क्या लाई थी तभी नानी बोलती है कि पहनने के लिए झगे और सिर के लिए टोपी लाई थी।

मेरेया होलरा वे अज्ज बादले दी रात।
होलर दी नानी आई थी, होलर नू क्या क्या ल्याई थी।
अंगे जो झगु ल्याई थी, सिरे जो टोपु ल्याई थी।

होलर बैठे जन्म लिया जी, आन्दिए काढ़िए चंगे दिने।
नानू लाईदे आपणी कमाइया
बांड बधाइयां, अज्ज के दिने।

नामकरण के समय गाये जाने वाले लोकगीत —
बधाइया माँगे ननदी, लाल की बधाई।
\# रुपइयाँ माँगे ननदी, लाल की बधाई।
एको रुपइया मेरे, ससुर की कमाई॥
अठन्नी ले जा नन्दी, लाल की बधाई।
रुपइया माँगे ननदी, लाल की बधाई।
एको अठन्नी मेरे, जेठ की कमाई॥
चवन्नी ले जा ननदी, लाल की बधाई।
रुपइया माँगे ननदी, लाल की बधाई।
एको चवन्नी मेरे, देवर की कमाई॥
एकन्नी ले जा ननदी, लाल की बधाई।
रुपइया माँगे ननदी, लाल की बधाई।
एको एकन्नी मेरे, साजन की कमाई॥
दो ढब्बे लेजा ननदी, लाल की बधाई।
रुपइया माँगे ननदी लाल की बधाई।
लाखों रुपइयां ~~ननदी~~ मेरे, साजन की कमाई॥
हजारों ले जा ननदी, लाल की बधाई।
रुपइया माँगे ननदी, लाल की बधाई॥

Date ______
Page ______

मुंडन

मुंडन – इस संस्कार में बालक का प्रथम बार केश कर्तन किया जाता है। इस संस्कार को बालक के तीसरे या पांचवें वर्ष में किया जाता है। कई बार घर में ही कर दिया जाता है एवं कई बार तीर्थ-स्थान पर शुभ मुहूर्त में किया जाता है। माताएं कई बार मनौतियां करती हैं कि पुत्र उत्पन्न होने पर उसका मुंडन किसी पवित्र स्थान पर किया। मुंडन गीतों में देव-स्तुति तथा जन्म की बधाई गीत ही प्रमुख रूप से गाये जाते हैं। मुंडन गीत प्रस्तुत है –

घुंघराले बाल गिरे रे सिरा।
दादा की हरसे, दादी की हरसे,
चाचा की हरसे, चाची की हरसे,
घुंघराले बाल गिरे रे सिरा।

घुंघराले बाल, गिरे रे सिरा।
ताया की हरसे, ताई की हरसे,
मासड की हरसे, मासी की हरसे,
घुंघराले बाल गिरे रे सिरा।

Date ______
Page ______

मुंडन करवाऊंगी सबको बुलाऊंगी,
जना सारा परिवार मेरे लाल के मुंडन में
जना लाल की दादी जी
जना लाल के दादा जी
पूरे करवाना रिवाज मेरे लाल के मुंडन में,
जना सारा परिवार मेरे लाल के मुंडन में
जना लाल की नानी जी
जना लाल के नाना जी
देना खूब आशीष मेरे लाल के मुंडन में
जना सारा परिवार मेरे लाल के मुंडन में
जना लाल की बुआ जी
जना लाल के फूफा जी
देना खूब प्यार मेरे लाल के मुंडन में
जना सारा परिवार मेरे लाल के मुंडन में
मुंडन करवाऊंगी सबको बुलाऊंगी
जना सारा परिवार मेरे लाल के मुंडन में।

सुहाग – पुत्री के विवाह के समय गाए जाने वाले गीतों को 'सुहाग' कहते हैं। इसके लिए महिलाएं दो समूह बना कर बारी बारी से गीत के बोल गाती हैं। इन गानों के बोल अगर हम गहराई से समझें तो बहुत कुछ सिखाते हैं।

नीचे बिलासपुर जिले का एक सुहाग गीत दिया है, जिसमें बेटी अपने पिता को कह रही है कि इस मेंहदी के पत्ते बहुत छोटे-2 हैं। शादी में एक-दो लाख का दहेज देना आपको शोभा नहीं होगी। पिता बेटी को समझाते हुए कह रहे हैं कि तू अपने पति से प्यार से बोलना तेरी शोभा उसी में है।

इसा मेंहदिया दे छोटे- छोटे पात
नींवें नींवें पात,
बैठ ओ पंछी रुदन करे ...2

पिताजी दाज देयां ओ इक लक्ख दा
देयां जी दो दो लक्ख दा
शोभा ओ तेरी नांई बणनी ...2

ओ धिए बोल तू मीठे-मीठे बोल
सजन जी दे कोल
शोभा ओ तेरी तांई बणनी ...2

इसा मेंहदिया दे छोटे- छोटे पात
नींवें नींवें पात,
बैठ ओ पंछी रुदन करे ...2

गीत हिमाचल प्रदेश का लोकगीत है इस गीत को विवाह के समय वधू पक्ष के लोग विदाई से पहले वधू की सिरगुंदी (वधू को विदाई के लिए त्यार) करने के समय गाया जाता है।

सिरे मेरे ढ़ैल घुनदियाँ साहिबा।
हो, सिरे मेरे ढ़ैल घुनदियाँ साहिबां।
हो ऊपर पाइदे मोर घुघियाँ, साहिबा।
हो ऊपर पाइदे मोर घुघियाँ, साहिबां।

सिरे मेरे ढ़ैल घुनदियाँ साहिबा।
हो, सिरे मेरे ढ़ैल घुनदियाँ, साहिबां।
हो ऊपर पाइदे मोर घुघियाँ साहिबां।
हो ऊपर पाइदे मोर घुघियाँ, साहिबां।

मोर घुघियाँ साँझो, खरियाँ नी लगदियाँ
मोर घुघियाँ सांझो, खरियाँ नी लगदियाँ,
हो ऊपर पाइदे डाक बंगला, साहिबा।
हो ऊपर पाइदे डाक बंगला, साहिबां।

हो सिरे मेरे ढ़ैल घुनदियाँ, साहिबा।
हो, सिरे मेरे ढ़ैल घुनदियाँ, साहिबा।

घोड़ी – विवाह की रस्म पूरी होने के बाद विदाई गीत गाए जाते हैं, इन रस्मों को कांगड़ा में 'घोड़ी' कहा जाता है। लड़के की शादी में गाए जाने वाले गीतों को "घोड़ियां" कहते हैं।

नीचे दिए गए गाने (घोड़ी) मे लड़का अपने दादा को कह रहा कि घोड़ी ले आओ मुझे भी नई दुल्हन का चाव है। फिर पूछ रहा कि बागों मे फूल खिलते हैं आज बहुत बड़ा फूल खिला है। तो दादा कहते हैं कि बेटा आजकल शादियां हो रहीं हैं ये इसलिए खिला है। फिर वो अपनी बहन से कपड़े और मामा से सेहरा मांगता है कि मुझे भी नई दुल्हन का चाव है।

घोड़ी लियाई दे अज्ज ओ दादाजी
नवींया बन्नीया दा चाव .2

बागीं तां खिलदे फुल्ल ओ दादाजी
अज्ज गह ओ खिलेया .2

लगियां प्रेम वाली शादियां बेटा जी
गह तांई ओ खिलेया .2

घोड़ी लियाई दे अज्ज ओ डैडी जी
नवींया बन्नीया दा चाव .2

घोड़ी लियाई दे अज्ज ओ चाचा जी
नवींया बन्नीया दा चाव .2

बागीं ता खिलदे फुल्ल ओ चाचा जी

नीचे दिये गए गाने (घोड़ी) मे पश्चिम से ठण्डी हवा झुल रही है क्योंकि उस समय शादियां हो रही हैं। फि. लड़का आँगन मे बैठ कर घोड़ी और अपनी बहन से कपड़े और मामा से सेहरा मांगता है। फिर उसी पर लड़की लड़के से पूछते हैं कि कौन से शहर ब्याहने जाना है और कब वापिस आना है और किसके साथ शादी करके आना है

दरवना ते पछिमा दी ठण्डी हवा झुल दी,
बेटा बैठेया आँगना सैं घोड़ी लगेयाँ मंगना।
बेटा जी केड़े शहर ब्याहने जाना किथे डेरे लाने,
कौन ब्याह के लेके आनी कोदों वापिस आना।
माता जी दिल्ली शहर ब्याहने जाना होटल डेरे लाने,
राधा रानी ब्याह के लानी कल वापिस आना

दरवना ते पश्चिमा दी ठण्डी हवा झुल दी,
भाई बैठेया आँगना सैं घोड़ी कपड़े लगेयाँ मंगना।
भाई जी केड़े शहर ब्याहने जाना किथे डेरे लाने,
कौन ब्याह के लेके आनी कोदों वापिस आना।
पैणा जी दिल्ली शहर ब्याहने जाना होटल डेरे लाने,
राधा रानी ब्याह के लानी कल वापिस आना

दरवना ते पछिमा दी ठण्डी हवा झुल दी
भानजा बैठेया आँगना सैं सेहरा लगेयाँ मंगना।
भानजे केड़े शहर ब्याहने जाना किथे डेरे लाने,
कौन ब्याह के लेके आनी कोदों वापिस आना।
मामा जी दिल्ली शहर ब्याहने जाना होटल डेरे लाने,
राधा रानी ब्याह के लानी कल वापिस आना

भारत में बहुत से राज्य है, जिसमें से एक है बिहार। यह राज्य भारत के उत्तर दिशा में है। इसकी सीमाएँ झारखंड, बंगाल, उत्तर प्रदेश और हमारे पड़ोसी देश नेपाल से लगती है। यह राज्य 94,000 वर्ग किलो मीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। जो इसे देश का बारवां सबसे बड़ा राज्य बनाता है। इस राज्य में 38 जिले मौजूद है, और पटना इस राज्य का सबसे बड़ा शहर है। और यह इस राज्य की राजधानी भी है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस राज्य में करीब 10,50,000.00 की जनसंख्या पाई जाती है। इस राज्य में भोजपुरी, मैथिली और मगही भाषाएँ बोली जाती है। हिन्दी और उर्दू इस राज्य की अधिकारिक भाषा है इस राज्य की 68% जनसंख्या पढ़ी लिखी है। इतिहास में हजारों सालों से बिहार और [illegible] का हब रहा है, politics, economy education इन्ही के साथ बिहार के लीची शिक्षकों के मामले में भी सबसे ऊपर माना जाता है, मनोरंजन के लिए बिहार की भोजपुरी इंडस्ट्री आज पूरी दुनियां में लोकप्रिय है।

(बंसकट्टी / मवकट्टी)

बसकट्टी की रस्म → इस रीति को शुरू करने से पहले कुलदेवी की पूजा की जाती है, पूजा के बाद चावल और काजल खिलाए जाते है, उसके बाद सब लोग जंगल (जिसका जंगल होता है) को लेकर बांस खिलाए जाते है, यह वह जगह होती है जहाँ बहुत से पेड़ होते हैं उसमें से बांस काटे जाते हैं, जिससे मण्डवा (मण्डप) बनाया जाता है, पहले बालक बच्चा का सर ढक के उसके हाथ में पास कुल्हाड़ी रखी हुई जाती है। और जाते समय गीत गाया जाता है, यह गीत महिलों के विवाह को गाया जाता है, जिसमें प्रकृति से जोड़ होता है उस महिलों का गीत गाया जाता है, फिर वहां पहुंच के बांस कंधा पर हल्दी लगाया जाता है फिर उसमें सिन्दूर लगाकर सभी बांसों को काटा जाता है, उस समय भी गीत गाया जाता है। उसके बाद सब लोग बांस लेकर गीत गाते हुए घर आते हैं, फिर घर के बाहर पहुंचते ही अन्दर जाने से पहले उनके ऊपर आम के पत्ते से लोटा जल छिड़का जाता है, उसके बाद सब घर के अन्दर जाते हैं।

(बरुआगाली)

शिव मंड पर राम चौठल होती
शिव मंड पर – (2)
सिलवा के हाथ कंगन पिन्हावादी
सिलवा के हाथ उबटि होती
शिव मंड पर
शिव मंड पर राम चौठल होती
शिव मंड पर
राम के हाथ कंगना पिन्हावादी
सिता के हाथ उबटि होती
शिव मंड पर
शिव मंड पर राम चौठल होती
शिव मंड पर
सिलवा के हाथ पियर पिलाकवर
सिलवा के पहिरल चिर चोली
शिव मंड पर
शिव मंड पर राम चौठल होती
शिव मंड पर
राम के पहिरल पियर पिताम्बर
सिता के पहिरल चीर चोली
शिव मंड पर
शिव मंड पर राम चौठल होती
शिव मंड पर – (2)

(मरवठ्ठी)

मरवठ्ठी वाले दिन घर के आंगन में मिट्टी भरा जाता है जहां मड़वा (मण्डप) बनता है। उसके बाद सब लोग मिलकर बांस गाड़ते हैं, फिर मिट्टी डाल मिट्टी का ऊँची जी जगह बनाते हैं फिर उसपर मण्डप बनाया जाता है, मण्डप के ऊपर खर (खपाली) डाला जाता है। उसे ऊपर डालने से पहले उन बांसों को लाल और पीले रंगों में पुताकर रंगा जाता है फिर उसे ज्यादातर एक लकड़ी के ऊपर रखा जाता है, चारों तरफ लाल खाँप डाला जाता है और बीच में पीला खाँप डाला जाता है। इस मण्डप को तैयार करने के दौरान औरतें गीत गाए जाते हैं। फिर सभी औरतें मिलकर गाती हैं। मरवठ्ठी के दिन से सभी को खिलाई दिया जाता है। खिलाई में खाने की चीजें होती हैं जिसमें फल, नमकीन, बिस्कुट, मिठाइयां आदि चीजें दी जाती हैं यह खिलाई मरवठ्ठी के दिन से जनेऊ के दिन तक दिया जाता है गांव के सभी लोगों को, जो घर में आकर गीत गाते हैं, या मिलने भी आते अथवा देते हैं

(कोहबर के गीत)

केकरा [illegible] पुतरी चार [illegible]
जाते हैं, [illegible] के लिए एक [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] है,
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] है,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] है,
हे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] के
[illegible] है,
[illegible] से [illegible] [illegible] पुत्र,
कि पुत्र [illegible] [illegible] है,
[illegible] [illegible] पुतरी चार [illegible]
जाते हैं।

(मटिकोर)

इस विधि में बन्ना के साथ पोखर तक जाकर मिट्टी कोड़ी जाती है। जिसको मटिकोर मंडप लगाते हैं इसको कई आदमी ही जाती है बन्ना की माँ की [illegible] से, जिसे पहनाने के बाद ही काम इस रस्म को शुरू किया जाता है। इस रस्म में एक [illegible] पर पांच धागे लगाते हैं सभी चाचियाँ तक होनी चाहिए, जो [illegible] उपयोग में ला लाया गया हो। जिसे लेकर सभी औरतें गाँव की के पोखर (तालाब) के पास जाया जाता है, फिर बन्ना पोखर की मिट्टी एक प्लेट में डालता है और उस प्लेट में मिट्टी के साथ सिक्का, सुपारी आदि चीजें रखी जाती जाती है, उसके बाद प्लेट को साड़ी के पल्लू से ढक कर गीत गाते हुए घर आते हैं। फिर मड़वा के चारों तरफ 3 बार प्लेट लेकर परिक्रमा लगाई जाती है। उसके बाद सभी औरतें नाचना शुरू करते हैं जिसके बाद यह रस्म खतम हो जाती है।

(बटगामनी)

[illegible] बरूआ [illegible] पूत बरूआ [illegible]
[illegible]
उठी - उठी [illegible] मिथिला
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] बरूआ [illegible] पूत बरूआ [illegible]
[illegible]

[illegible] के [illegible] फूल [illegible]
[illegible] फूलल बाड़ यौ,
[illegible] कोमल [illegible] सौरभ
[illegible] फूल [illegible] यौ,
[illegible]
[illegible] यौ,
[illegible] है,
[illegible] यौ,
[illegible]
[illegible] यौ
[illegible] के बिना [illegible] ले जाओ
[illegible] उदास यौ.

(दलोही)

इस विधि के शुरू होने के पहले बरूआ के आँख में काजल लगाया जाता है, और पिठार सिन्दूर लगाकर टीका किया जाता है। उसके बाद बरूआ को धोती पहनाई जाती है। उपनयन के हर रसम के लिए बरूआ और उसकी माँ के कपड़े नाना के घर से आते हैं, उपनयन के दौरान हो रहे हर रसम में केवल नाना के घर से आए हुए कपड़े ही पहने जाते हैं। दलोही के रसम में बरूआ को पोखर (तालाब) पर लेकर जाया जाता है, उसके शरीर पर हल्दी लगाई जाती है, फिर उसे पहले दूध से धोया जाता है, उसके बाद कोनिया से पोखर का पानी लेकर शरीर की हल्दी को धोया जाता है, यह विधि तीन बार कि जाती है, उसके बाद बरूआ उसी पोखर में डुबकी लगाकर नहाता है, फिर उसे नए या अछूत कपड़े पहनाए जाते है। इसके दौरान गाए जाने वाले गीत को दलोही कहते है।

(सोहर के गीत)

एकत मरई ही डार दुख, दोसर पांजर
दुख है,
ललना के तेसर मरई ही ननद दुख
ठाड़े बाहे लुटत है।
आड़ी मिल हम बैठी मे गाउब
गुड़ी लेब लटकाइबो, गुड़ी देख ननद
परैली, आड़ी जाइत बधाई माँ
एकत मरई ही डार दुख, दोसर
पांजर दुख है।
गहना मिल हम बैठी म गाउब
टलहा लेब लटकाहियो, टलहा देख ननद
परैली गहना जाइत बाच माँ
ये गियो बहो सोहर गावल गाए
को खुशावल है, ललना रे जिन
कादु ईंडियो न पुन कि पुत्र
जनम जाओल है।
एकत मरई ही डार दुख, दोसर
पांजर दुख है।

(जनेऊ संस्कार)

[illegible]

से बाधा जाता है, लेवा कराने के बाद बालक को गुरुजी दीक्षा प्रदान करते है, जिसके लिए 5 कलश के अभिमंत्रित जल रखा जाता है, जिससे बालक को नहलाते हैं, इसके बाद बालक को आसन पर अभिमंत्रित जनेऊ पहनाया जाता है, जिसके दौरान मंत्र पढ़े जाते हैं, फिर बालक को उसके पापा, पंडित के साथ, गायत्री मंत्र पढ़ते तथा धारण कराया जाता है। इसके बाद बालक का मुण्डन करते हैं, बाद में सभी औरतें मिल कर बालक को लेकर घर जाते हैं आशीर्वाद दिलाते। कुछ लोग वहां अपनी श्रद्धा के अनुसार बालक को कुछ देते हैं, उसके बाद पूरे समाज के सभी लोगों को भोजन कराया जाता है इसके बाद घर आकर कुल देवी का आशीर्वाद लेकर पहिले कपड़े तथा ब्राह्मणों द्वारा गुरु मंत्र दिया जाता है। फिर सभी को भोजन कराया जाता है, इसके बाद अपनी इच्छा अनुसार भंडारा कराया जाता है, जिसमें कई गांवों के लोगों को बुलाया जाता है, गांव के सभी भोजन कराया जाता है, इसके बाद उसके अगले चार दिन तक [illegible] लिया जाता है, जिसमें कुछ [illegible] जिसके के पहले नहीं जाता दिया

जाता है, कलमकारी के येत्र को लेकर शतीस के आखिरी दिन तक मण्डप को खाली नहीं छोड़ा जाता, रोजाना रात को उस मण्डप में किसी को सोना पड़ता है। तथा बालक जनेऊ धारण वाले दिन से शतीस के आखिरी दिन यानी चौथे दिन तक स्नान करवाया नहीं जाता केवल मिश्री सेवन मिलने वाली फलों आदि को खाता है, उसके बाद शतीस के आखिरी दिन भगवान सत्यनारायण की महापूजा करवाई जाती है जिसके समाप्त होने के बाद महाभोज करवाया जाता है, इस भोज में भी बहुत से गावों के लोगों को भोज कराया जाता है जिसके बाद जनेऊ के दिन जितने लोग घर आते हैं, उन सभी को साड़िया दि जाती है, तथा पुरुषों को धोती कुर्ते दिए जाते है, जिसके बाद उपनयन पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है।

(भिक्षा देते समय का गीत)

मड़वा पर बईसल छतीन बरूआ भिखारी बईन का
बरूआ भिखारी बईन का, बरूआ भिखारी बईन का
मड़वा पर बईसल छतीन बरूआ भिखारी बईन का...
बरूआ के दादी भिख लेने ठाढे छतीन
बरूआ के नानी भिख लेने ठाढे छतीन
भिखो ले लए छतीन बरूआ भिखारी बईन का
बरूआ के चाची भीख लेने ठाढे छतीन
बरूआ के भाभी भीख लेने ठाढे छतीन
झोला के चैन मंगाई छतीन बरूआ भिखारी बईन का
मड़वा पर बईसल छतीन बरूआ भिखारी बईन का...
बरूआ के अम्मा भीख लेने ठाढ छतीन
बरूआ के मौसी भीख लेने ठाढ छतीन
भिखो ले लए छतीन बरूआ भिखारी बईन का
बरूआ के बुआ भीख लेने ठाढे छतीन
बरूआ के दीदी भीख लेने ठाढे छतीन
भिखो से घटी मंगाई छतीन बरूआ भिखारी बईन का
मड़वा पर बईसल छतीन बरूआ भिखारी बईन का.
बरूआ भिखारी बईन का, बरूआ भिखारी बईन का
मड़वा पर बईसल छतीन बरूआ भिखारी बईन का...

मेरे Assignment के दौरान लिये गए कुछ गीत तथा इनके मेरी मम्मी (प्रमिला देवी) के द्वारा बताया गया है, तथा कुछ गीत मेरी दादी (अमोला देवी) द्वारा फोन कॉल के माध्यम से बताया गया है।

"लवंडा नाच"

लवंडा नाच का शाब्दिक अर्थ है। लड़को का नृत्य। यह भारत नेपाल मॉरीशस और कैरिबियाई द्वीपो के "भोजपुरी भाषा समुदाय का एक लोक नृत्य है।

- यह केवल पुरुषो द्वारा किया जाता है। जो महिला के कपड़े पहनते हैं। जिन्हे "लवंडा" कहा जाता है।
- शादी समारोह के दौरान लवंडा नर्तक एक केन्द्र बिंदु होते है। जो दूल्हे के दल को दुल्हन के घर तक ले जाते है।

एक पुरुष स्त्री रूप मे सजते हुए।

इतिहासिक तथ्य :-

इस लोक नृत्य का सबसे पहला उल्लेख 11 वीं शताब्दी में मिलता है जो भोजपुरी क्षेत्र मे जीवित रहा और 19 वीं शताब्दी मे, सदियो पुराने कला रूप को लोगो के रंगमंच मे बदलने का यह विचार "भिखारी ठाकुर" द्वारा परिकल्पित किया गया है।

- जिन्हे इसे लोकप्रिय बनाने का श्रेय भी जाता है। बीसवीं सदी के पहले कई दशको मे जब दुनिया क्रांतिकारी बदलावो को देख रही थी जिसमे स्त्रियो के अधिकारो को मान्यता दी गई थी, भिखारी ठाकुर ने कवि रंगमंच के माध्यम से अपने निरंतर संघर्ष और अभिव्यक्ति की प्रवृति को प्रदर्शित किया जिसे लोगो की भाषा मे "लवंडा नृत्य" के रूप मे जाना जाता है
- जिसमे "गीत, नृत्य, कॉमेडी, व्यंग्य, वाक्य-विन्यास, मजाक, पैरोडी" और थियेटर शामिल है। जहाँ पुरुष पूरी रात चलने वाले प्रदर्शनो मे महिलाओ की नकल करते है।

उल्लेखनीय कलाकार :-

(i) भिखारी ठाकुर

- इनका जन्म 18 दिसंबर 1887 को सारन के कुतबपुर गांव, बिहार राज्य मे हुआ था।
- भारतीय भोजपुरी भाषा के कवि, नाटककार, गीतकार, अभिनेता, लोक नर्तक, लोक गायक और सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्हे भोजपुरी भाषा के महानतम लेखकों मे से एक और पूर्वांचल और बिहार के सबसे लोकप्रिय लोक लेखक के रूप मे माना जाता है।
- ठाकुर को "भोजपुरी का शेक्सपियर" और "राय बहादुर" कहा जाता है। उनकी रचनाओ मे एक दर्जन से अधिक नाटक, एकालाप, कविताएं और भजन से अधिक है। जो लगभग तीन दर्जन पुस्तकों में छपे थे।

उनकी उल्लेखनीय रचनाएं।

- बिदेसिया –

बिदेसिया या बहारा बहार भोजपुरी नाटककार भिखारी ठाकुर द्वारा रचित एक भोजपुरी नाटक है।
यह भिखारी ठाकुर द्वारा महिला सशक्तिकरण, पलायन और गरीबी पर लिखे गए कई नाटको मे से एक है। इसकी लोकप्रियता के कारण यह भोजपुरी क्षेत्र की लोक नाट्य शैली बन गई।

- गबरघिचोर –

इस नाटक मे एक औरत के बारे में है जिसका पति प्रवासी था और उसका अपने गांव के एक आदमी के साथ अवैध संबंध था और उस आदमी से गबरघिचोर नाम का एक बच्चा था। अभी 15 वर्षीय लड़के को देखता है।

- बेटी बेचवा :-

बेटी वियोग नाटककार भिखारी ठाकुर द्वारा रचित एक भोजपुरी नाटक है। यह ठाकुर द्वारा सच्ची घटनाओं पर आधारित है। यह एक ऐसा नाटको मे से एक था। जो समाज के कई पक्ष, महिला और गरीबी सशक्तिकरण को दर्शाता है।
नाटक मे बेमेल विवाह प्रथा को दिखाया गया है। जो लड़की का परिवार पैसे के बदले मे उसकी शादी और वह बूढ़ों के बीच विवाह कर दिया जाता है।

भिखारी ठाकुर ←

(ii) राम चन्द्र मांझी।

राम चन्द्र मांझी, एक भारतीय भोजपुरी लोक नर्तक और थिएटर कलाकार थे। जो "लौंडा नृत्य" और थिएटर कलाकार थे, जो भिखारी ठाकुर की नाटक टीम के सदस्यों मे से एक थे और उन्हे 2017 मे संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। और 2021 मे भारत के "चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार" पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

रामचन्द्र मांझी (1925-2022)

हैं, बल्कि वे क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं और जीवन शैली को भी दर्शाते हैं।

बिहार के लोकगीतों की विविधता अद्भुत है, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

1) **कजरी** : यह गीत बिहार की गर्मियों की मधुर धुन है। इसे गर्मियों में गाया जाता है। यह गीत प्रेम, विरह, और वर्षा की कामना के भावों को व्यक्त करता है।

<u>कजरी की विशेषताएं :—</u>

- मौसमी गीत :— यह गीत विशेष रूप से गर्मियों के मौसम से जुड़ा हुआ है।
- भावनात्मक गहराई :— कजरी में प्रेम और विरह की गहरी भावनाएं व्यक्त की जाती हैं।
- वर्षा की कामना :— किसान समाज के लिए वर्षा के महत्व को देखते हुए कजरी में वर्षा की कामना भी की जाती है।
- मधुर स्वर और ताल :— कजरी के गीतों में मधुर स्वर और ताल का प्रयोग किया जाता है, जो इसे सुखद बनाता है।

कजरी का सांस्कृतिक महत्व:

- सांस्कृतिक पहचान :— कजरी बिहार की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- सामाजिक बंधन :— यह गीत लोगों को एकजुट करता है और सामाजिक बंधन को मजबूत करता है।
- परंपरा का संरक्षण :— कजरी की परंपरा को पीढ़ी दर पीढ़ी सहेजा जाता है।

आज के समय में कजरी की लोकप्रियता बरकरार है। कई संगीतकार और गायक कजरी को आधुनिक रूप देते हुए इसे युवा पीढ़ी तक पहुंचा रहे हैं। इससे कजरी की परंपरा का संरक्षण हो रहा है।

निष्कर्ष :

कजरी बिहार की गर्मियों की मधुर धुन है जो प्रेम, विरह और वर्षा की कामना को व्यक्त करती है। यह गीत न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि बिहार की सांस्कृतिक विरासत का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

2) <u>सोहर</u> : यह गीत शिशु के स्वागत पर गाया जाता है। यह गीत माता-पिता की खुशी और बच्चे की सुखमय जीवन की कामना व्यक्त करता है।

- जन्म उत्सव :— यह गीत नवजात शिशु के जन्म के अवसर पर गाया जाता है।
- शुभकामनाएं :— सोहर गीत में नवजात शिशु के लिए सुख, समृद्धि और दीर्घायु की कामना की जाती है।
- मंगलमय स्वर और धुन :— सोहर गीतों में मंगलमय स्वर और धुन का प्रयोग किया जाता है।
- परंपरागत रीति-रिवाज :— सोहर गीतों का गायन परंपरागत रीति-रिवाजों का हिस्सा है।

आधुनिक दौर में सोहर :—

आज के समय में भी सोहर की परंपरा जारी है। हालांकि, आधुनिक परिवर्तनों के साथ कुछ बदलाव भी देखने को मिलते हैं। कुछ लोग सोहर गीतों को आधुनिक संगीत के साथ जोड़कर एक नया रूप देने का प्रयास कर रहे हैं।

निष्कर्ष :

सोहर बिहार की एक सुंदर परंपरा है। जो नवजात शिशु के आगमन का स्वागत करती है। यह गीत न केवल खुशी और आशीर्वाद का संदेश देता है, बल्कि बिहार की सांस्कृतिक विरासत का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

3) बिरहा : यह गीत प्रेम और विरह की भावनाओं को व्यक्त करता है। यह गीत पुरुष और स्त्री के बीच संवादात्मक रूप में गाया जाता है।

बिरहा की विशेषताएं :—

- प्रेम और विरह :— बिरहा में प्रेम और विरह की गहरी भावनाएं व्यक्त की जाती हैं।
- संवादात्मक गायन :— यह गीत पुरूष और स्त्री के बीच संवादात्मक रूप में गाया जाता है।
- भावनात्मक गहराई :— बिरहा गीतों में गहरी भावनात्मक गहराई होती है।
- सुरीली धुन :— बिरहा गीतों में सुरीली धुन का प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक दौर में बिरहा :—

आज के समय में भी बिरहा की परंपरा जारी है। हालांकि, आधुनिक परिवर्तनों के साथ कुछ बदलाव भी देखने को मिलते हैं। कुछ लोग बिरहा गीतों को आधुनिक संगीत के साथ जोड़कर एक नया रूप देने का प्रयास कर रहे हैं।

निष्कर्ष :—

बिरहा बिहार की एक सुंदर परंपरा है जो प्रेम और विरह की गहरी भावनाओं को व्यक्त करती है। यह गीत न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि बिहार की सांस्कृतिक ~~विरसा~~ विरासत का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

4.) झुमुर :— बिहार का उल्लासपूर्ण लोक नृत्य और गीत

झुमुर बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओड़िशा और पश्चिम बंगाल के कुछ क्षेत्रों में लोकप्रिय एक जीवंत नृत्य और गीत शैली है। यह उत्सव, खुशी और ~~फसल~~ फसल कटाई के मौसम से जुड़ा हुआ है।

★ झुमुर की विशेषताएं :—

- उत्सव का प्रतीक :— यह नृत्य और गीत खुशी, उत्सव, और समूह भावना का प्रतीक है।
- तेज ताल और मधुर धुन :— झुमुर की संगीत में तेज ताल और मधुर धुन होती है। जो लोगों को नृत्य करने के लिए प्रेरित करती है।
- सामूहिक नृत्य :— ~~झु~~ झुमुर आम तौर पर समूह में किया जाता है, जिसमें लोग एक साथ नृत्य करते हैं।
- स्थानीय वाद्य यंत्र :— ढोलक, मंजीरा, और अन्य स्थानीय वाद्य यंत्रों का प्रयोग झुमुर में किया जाता है।

झुमुर का सांस्कृतिक महत्व :—

- सांस्कृतिक विरासत :— झुमुर बिहार की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- सामाजिक बंधन :— यह नृत्य और गीत समुदाय को एकजुट करता है। और सामाजिक बंधन को मजबूत करता है।

प्रयोग किया जाता है, संगीत की धुनें मधुर और मनमोहक होता है।

- भाषा :— ये गीत स्थानीय बोली जैसे :— भोजपुरी, मैथली आदि में गाए जाते हैं।

★ समा -चकेवा गीतों का महत्व :—

- सांस्कृतिक विरासत :— यह गीत बिहार की सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है।
- पर्यावरण संरक्षण :— इन गीतों के माध्यम से प्रकृति के प्रति जागरूकता बढ़ती।
- भावनात्मक अभिव्यक्ति :— ये गीत लोगों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम प्रदान करते हैं।

★ समा -चकेवा गीतों के उदाहरण :—

समा चकेवा गीतों के कई उदाहरण मिलते हैं। इन गीतों के बोल और धुनें क्षेत्र और गायक के अनुसार अलग -2 हो सकते हैं।

यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं :—

- चकेवा चकोर बोलै रे, हमरा मनवा रोवैरे
- सावन आयो रे, पिया न आयो रे
- काली घटा छाई रे, मोरे मनवा डराई रे

★ समा -चकेवा गीतों का भविष्य :—

आज के समय में लोकगीतों का महत्व कम होता जा रहा है। लेकिन समा चकेवा जैसे गीतों का जीवित रखने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। कई संगीतकार और कलाकार इन गीतों को नए रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

✳ उत्तराखण्ड ✳

उत्तराखण्ड उत्तरभारत का एक राज्य जो कि 9 नवम्बर 2000 को उत्तर प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम 2000 के तहत हुआ था। उत्तराखण्ड के मूल निवासियों को कुमाऊँनी या गढ़वाली कहा जाता है। उत्तराखण्ड का सबसे प्राचीन नगर अल्मोड़ा उत्तराखण्ड राज्य की दो राजधानियाँ है। ग्रीष्मकालीन राजधानी भराड़ीसैण और शीतकालीन राजधानी देहरादून है।

सुंदरता ⇒ प्राकृतिक छटायें और सुंदरता से भरे हैं यह प्रदेश भारत का सबसे सुन्दर प्रदेश है। यहा ऊँचे-2 हरे भरे पहाड़ तो वही कई धार्मिक स्थल है। यहा के धार्मिक स्थल में ऋषिकेश, हरिद्वार, केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री यमुनोत्री आदि धार्मिक जगहो के साथ ही कुछ ऐसे प्रकृति स्थान है जहां जाकर आपका मन प्रफुल्लित के साथ आपको एक अद्भुत शांति का अनुभव होगा।

नदियां — हिन्दु धर्म की पवित्र और सबसे बडी नदियो गंगा और यमुना के उद्गम स्थल क्रमश: गंगोत्री और यमुनोत्री तथा इसके तटो पर बसने वाले वैदिक संस्कृति के कई महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान है जहा लोग दूर-2 से नदियो में स्थित तीर्थ मन्दिरो मे दर्शन करने आते केदारनाथ कहा जाता है। केदारनाथ मे स्वर्ग से हवा आती है। केदारनाथ एक ऐसा तीर्थ मन्दिर जिसके पास और चार मंदिर है। तुंगनाथ, रुद्रनाथ, मदमहेश्वर और कल्पेश्वर जो पंच केदार तीर्थ स्थल है, जहां हर वर्ष लाखो लोग दर्शन करते है।

✳ रस्मे ✳

उत्तराखण्ड की शादियो से होने वाले रस्मे जो निम्नलिखित है ⇩

(1) गणेश पुजा ⇒ उत्तराखंड की शादी मे सबसे पहले गणेश पुजा होती है। गणेश पुजा के बाद ही अन्य किसी रस्म का आरम्भ होता है।

(2) हल्दी का बाना — इस रस्म लडकी और लडका दोनो को हल्दी के लिए बाना दिये जाता है। जिसमे सबसे पहले पंडित द्वारा बाने के माध्यम से हल्दी बांट दिये जाते है। फिर पांच कन्या और लेकिन आज के टाइम से सारे परिवार के लोग इस रस्म मे भाग लेते है।

(3) बेदो - बेदो की रस्म मे पवित्र मंत्रो से लडकी लडके को बिठाया जाता है, जिसमे सात फेरे और गाय दान और कन्या दान की सारी पूजा किया जाता है।

(4) खान पान — शादी के खान पान की व्यवस्था बडे ही पारम्परिक तरीके किया जाता है, जिसमे मुख्य रूप से दाल सब्जी, रोटी चावल अन्य कई पकवान होते है जिन्हे जमीन मे बैठ कर, पेड के पत्तो से बनी थाली मे दिये जाते है, और उत्तराखंड की एक पारंपरिक मिठाई (अरसा) जिसे खास तौर पर शादियो त्यौहारो मे ही बनाया और खाया जाता है।

(5) धुलियाघाट — शाम को जब वर दुल्हन के दरवाजे पर पहुचता है, तो अविवाहित लडकियां सिर पर पानी से

* गणेश पूजा *

देणा होयाँ खोली का गणेसा हे
देणा होया मोरी का नरेणा है।
देणा होया भूमी का भुम्याल हे
देणा होया पंचनाम देवा है
देणा होयो भोखोली का नाम हे।
देणा होया नौखडी नरसिंगा है।
देणा होया खोली का गणेश है।
देणा होया मोरी का नरेणा है।
देणा होया भूमि का भुम्याल है
देणा होया पाँच नाम देवा है
देणा होया नौ खोली का नाम है।
देणा होया नौखडी नरसिंघा है।

* हल्दी बान *

दे धावा दे धावा मेरा करमा जी दे धावा हल्दी
का बान है जिया रैया जिया मेरा करमा जी जौन
दीनि हल्दी का बाना है दे धावा हल्दी का बान
है जिया रैया जिया मेरी बडी जी जौन दीनि दे
दूध का बान है दे धावा दे धावा मेरी चाची जी
दे धावा हयू तेल का बान है जिया रैया जिया
मे पुफू जी जौन दीनि चन्दन का बान है।

* मंगल स्नान *

कयान होये कयान होये कुण्ड कौंज्याल?
कयान होये होये होला सुरिज घुमेलो?
उबादेस उबादेस चौरा जी नेहन्दी तब होये तब
होये कुण्ड कौज्याल कयान आई कयान आई
सिन्धु छलार कयान होये होला सुरिज घुमेलो
नेहण लागी लछमी की लाडी
तब आये तब आये सिन्धु छलार
तब होये होला सुरिज घुमेलो

PAGE NO.
DATE

* बरात *

भैंजी की बरात

कत्था शुभ दिन च आज, कत्था स्वौंणी रात
सम्लोणया रली सदानी भैंजी की बरात
बजण लैगी ढोल दमाऊ बैंडो की झमकताल
ब्यड़या न्यूतारी कैरी नाची नाची कमाल
चांदी की पलेट मा खायी फाफरु साव
समलोणया रली सदानी, भैंजी की बरात

कत्था शुभ दिन च आज कत्था स्वौंणी रात
समलोणया रली सदानी भैंजी बरात

PAGE NO.
DATE

* विदाई *

* बिदै *

काला डाण्डा पार बाबा काली च कुयेड़ी
परूली परूली लगाली मे डर

काला डाण्डा पार बाबा
पैली होलो लाडी त्वे सकिलजानित

तब होले लाडी त्वे हाथी अर घोड़ा
परूली नि भेजणो

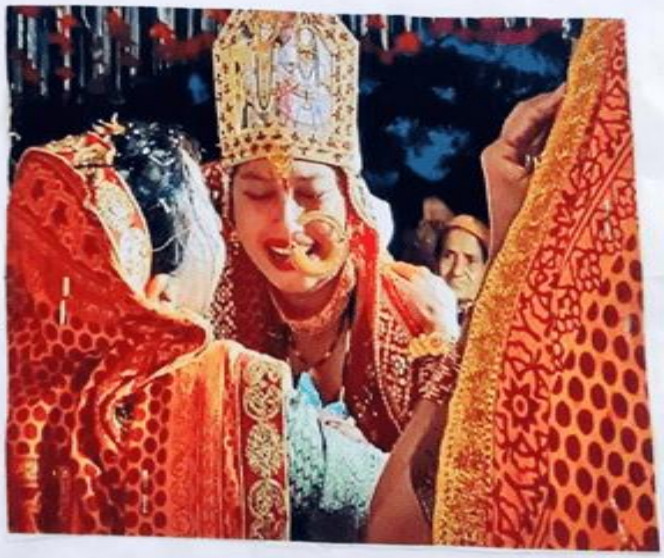

* रंगीली पिछोड़ी *

* रंगीली पिछोड़ी *

रंगीली पिछोड़ी कुमाऊं की एक पारंपरिक पोशाक है विवाह नामकरण या समारोह जैसे कार्यक्रमों में विवाहित महिलाएं इस पोशाक को पहनती हैं विवाह के दौरान दुल्हन को माँ और सास पिछोड़ा उपहार में देते हैं। यह हर महिला के लिए उत्साहपूर्वक से दिया जाने वाला स्वयं उपहार होता है। क्योंकि इसमें उसकी शादी से जुड़ी यादें होती हैं। यह गहरा, पीला और सुर्ख लाल रंग से सुनहरे गोटे द्वारा, उकेरी गया सुन्दर चित्र से सुसज्जित रंगीला पिछोड़ा रूप में जाना जाता है।

छठ पूजा

की शुभकामनाएं

Date ______
Page ______

छठ पूजा क्या है? और यह क्यों मनाया जाता है।?

छठ पूजा बिहार का प्रसिद्ध तथा पवित्र त्योहार है। यह त्योहार हिंदू कैलेंडर के अनुसार कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को मनाया जाता है। छठ पूजा मुख्य रूप से बिहार एवं नेपाल, उत्तर प्रदेश में मनाई जाती है। यह त्योहार मॉरीशस, नेपाल और भारत के अन्य राज्यों पश्चिम बंगाल, झारखंड और असम में भी मनाया जाता है।

छठ पूजा की तैयारी महिलाएं दिवाली के बाद से शुरू कर देती हैं। इस त्योहार को डाला छठ के नाम से भी जाना जाता है। यह त्योहार पति की लंबी आयु और संतान सुख की कामना के लिए मनाया जाता है। इस त्योहार में महिलाएं 36 घंटे का निर्जला व्रत उपवास रखती हैं। इस त्योहार में सफाई का विशेषकर ध्यान रखना पड़ता है। क्योंकि यह बहुत ही पवित्र विधियों से मनाई जाती है। इस त्योहार को महिला तथा पुरुष दोनों ही मिलकर समाप्त करते हैं।

Teacher's Signature______

यह क्यों मनाया जाता है: और इसमें क्या-2 करते हैं।

छठ बिहार का महापर्व माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार माता सीता ने सर्वप्रथम पहला छठ पूजन बिहार के मुंगेर में गंगा तट पर संपन्न किया था। जिसके बाद महापर्व की शुरुआत हुई। छठ को बिहार का महापर्व माना जाता है। यह पर्व बिहार के साथ देश के अन्य राज्यों में भी बड़े धूम-धाम के साथ मनाया जाता है।

यह पर्व चार दिनों तक मनाया जाता है। इस त्योहार के पहले दिन महिलाएं चने की दाल, लौकी की सब्जी एवं रोटी खाती है। दूसरे दिन महिलाएं छोटी छठ (खरना) की रात में गुड़ की खीर तथा रोटी का सेवन करके व्रत शुरू कर देती हैं। इसमें तीसरे दिन महिलाएं दिन भर व्रत रखने के साथ ही डूबते सूरज को अर्घ्य देती हैं। चौथे दिन उगते सूरज को अर्घ्य देकर व्रत का पारण (पालन) करती हैं। इसमें महिलाएं अपने घर एवं परिवार के स्वास्थ्य समृद्धि [illegible] प्रतीत सूरज देव की कृपा बनी [illegible] इसलिए इस त्योहार को मनाया जाता है।

Teacher's Signature

नहाए

खाए

नहाए-खाए

छठ पूजा की शुरुआत सबसे पहले दिन नहाए-खाए से शुरू किया जाता है। जिसमें महिलाएं पहले सिंदूर एवं धूप से छठी मइया की पूजा करते हैं। फिर लौकी की सब्जी एवं चावल बनाते हैं। और उसे खाकर अपने व्रत की शुरुआत करते हैं। छठ पूजा और व्रत में पवित्रता का बहुत महत्व है। और इस दिन सुबह नहा कर बस समय भोजन किया जाता है। भोजन में घीया कद्दू की सब्जी बनाई जाती है। और सारी दिश भोजन अर्पित की जाती है। नहाने से शरीर की पवित्रता, हल्का सुपाच्य भोजन करने से अंदरूनी पवित्रता और भक्ति भजन करने से मन की पवित्रता आती है। यह त्योहार में महिलाएं इस दीन शाम के दिन भी धूप एवं सिंदुर लेकर सूर्य देव को अरग देते है। इस दिन महिलाएं सुबह नहा कर नए वस्त्र पहन कर अरघ देते है। और शाम को भी महिलाएं नए वस्त्र के साथ ही सूर्य देव को अरघ देते हैं। फिर अगले दिन खरना की शुरुआत करते हैं।

Teacher's Signature

खरना

खरना

नहाए-खाए के बाद महिलाएं दूसरे दिन खरना की तैयारी में लग जाती हैं। खरना के दिन पहले महिलाएं बाजार से गेहूं लेकर आती हैं। फिर उसे धोकर सुखा देती हैं। फिर उसे मशीन में पीस देती हैं या रख देती हैं। गेहूं सूखा अथवा पिस देने के बाद महिलाएं चूल्हा बनाने की तैयारी करते हैं। चूल्हा बनाने के बाद महिलाएं उसे कुछ देर सूखने के लिए छोड़ देती हैं। जब चूल्हा सूख जाता है। तब महिलाएं खीर बनाने की तैयारी शुरू कर देती हैं। पहले महिलाएं खीर बनाने की सामग्री को तैयार करके रख लेती हैं। उसके बाद महिला शाम को 5 या 6 बजे नहाकर सूर्य देव को जल चढ़ाती हैं। अर्थात चूल्हे की पूजा कर लेती हैं। फिर महिलाएं चूल्हे पर खीर बनाना शुरू करती हैं। खीर बन जाने के बाद उसे गेहूं की रोटी बनाते हैं। फिर महिलाएं उसे थोड़ा सा खाकर अपना व्रत शुरू कर देती हैं। खीर एवं रोटी ये प्रसाद के रूप में थोड़ा-थोड़ा सब घर पहुंचाया जाता है। ये सब कर लेने के बाद महिलाएं अपना 36 घंटे का व्रत शुरू कर देते हैं। खरना के बाद अगले दिन महिलाएं पहले अरघ की तैयारी करती हैं।

Teacher's Signature________

छठ गीत

खरना करने पर गीत

जोड़े-जोड़े फलवा सूरज देव घटवा प तीवई चढ़ावे ली हो। -2
जल बीच खाड़ा होई दर्शन ला आसरा लगावेली हो। -2

शीतली बयरीया शीतल दूजे पनीया। कब देव-देवता त आके दर्शनीया। शीतली बयरिया शीतल दूजे पनीया। कब देव-देवता तू आके दर्शनीया।
जोड़े-जोड़े सुपवा आदित देव घटवा प तीवई चढ़ावेली हो। जल बीच खाड़ा होई दर्शन ला आसरा लगावेली हो। -2
सुखली कसीरीया सजल सुधे मनवा पूर्वे लागल बड़ुये सबके ध्यनवा-2
जोड़े-जोड़े ठहुआ हे दीनानाथ घटवा प तीवई चढ़ावेली हो। जल बीच खाड़ा दर्शन ला आसरा लगावेली हो।
जल बीच खाड़ा होई दर्शन ला आसरा लगावे ली हो।

[redacted]

Teacher's Signature________

Date ______
Page ______

☼ पहला अरघ की तैयारी ☼

खरना के अगले दिन से महिलाएं पहले अरघ की तैयारियां शुरू कर देती हैं। जिसमें महिलाएं सुबह 10 बजे से मिट्टी का चूल्हा बनाने चलती हैं। चूल्हा बन जाने के बाद महिलाएं उसे कुछ देर सुखने के लिए छोड़ देती है। उसके बाद महिलाएं बाजार जाकर सभी प्रकार के फल एवं दउरा और सूप लेके आती हैं। दउरा एवं सूप को सजाने के लिए विभिन्न प्रकार के उसमें फल रख दिए जाते हैं। फल में होता है सेब, केला, अनार, संतरा, अनानास, नाशपति, नारियल, मूली, आंवला, सिंघाड़ा, मूंगफली, ठेकुआ, पपीता आदि फलों से सजाए जाते हैं फिर इन सब के बाद महिलाएं अपने हाथों द्वारा बनाए गए चूल्हे पर प्रसाद बनाना शुरू कर देती है। प्रसाद में ठेकुआ बनाया जाता है। प्रसाद बना लेने के बाद महिलाएं दउरा को सजाने लग जाती हैं। फल और रंगो या वस्तों से उसे सजा दिया जाता है। उसके बाद महिलाएं नहा-धोकर खुद तैयार हो जाती है। और पुरुष भी पीले रंग की धोती एवं कुर्ता पहन कर तैयार हो जाते हैं। तैयार हो जाने के बाद पुरुष एवं महिलाएं घाट पर जाने लगते हैं घाट पर जाने का 5 बजे से सभी लोग अपने-अपने घर से गीत गाते हुए निकलने लगते हैं।

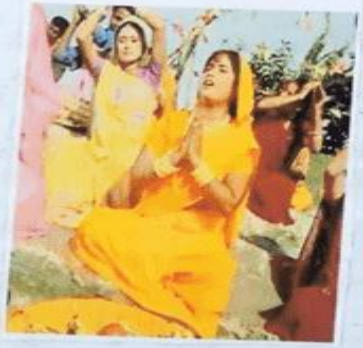

छठ गीत

Date ______
Page ______

अरघ समय गीत

भोरे-भोरे घटिया पर गंगा जी के पानीया
में अरघ देवे खड़ा बानी हो। -2
तीन दिन के भूखल तीवई अरज
करे, सुरुज देव कहाँ बानी हो।

सुरु-सुरु बहेला ई भोर के पवनवा
शुद्ध भईले मन गंगा जी में नहाके
असनानवा। -2
कर जोरि बरती करि ली
बिनती तोहसे, अरघ लेले खड़ा बानी हो।
तीन-दिन के भूखल तीवई अरज
करे, सुरुज देव कहाँ बानी हो।

बड़ा ई जतन के कठिन ई बरतिया
साल कइली छठी मइया, करा तु मदतिया
रहिया निहारे तोहरे अस्सुरा के अखियाँ
से अरघ लेले खाड़ा बानी हो। तीन-
दिन के भूखल तीवई अरज करे,
सुरुज देव कहाँ बानी हो। -2

[redacted]

गीत गाते

हुए महिलाए

सुबह के अरघ की तैयारी

सुबह 4 बजे उठकर महिलाएं नहाकर वस्त्र पहन कर 5 बजे से घाट पर जाने लग जाती है। कुछ महिलाऐ पीछे से गीत गाती हुए निकलती है। घाट पर पहुंच जाने के बाद वहां पर बैठकर कुछ देर महिलाऐ गीत गाती है। फिर उसके बाद धूप जलाकर वेदी पर रख देती है। उसके बाद महिलाऐ पानी मे जाकर खड़ी हो जाती है। जब तक सुरज देव निकल नही तब तक महिलाऐ एवं पुरुष अपने हाथो मे सुप एव नारियल लेकर खड़े रहते है। सुरज देव के निकल जाने पर सभी महिलाओ को पंडित जल देते है। और महिलाऐ सुरज देव को पांच बार जल घुमाकर चढ़ाती है। ये सब कर लेने के बाद महिलाऐ पानी निकल जाती है। और वस्त्र बदल लेती है। वस्त्र बदलने के बाद सभी महिलाऐ पंडित जी को प्रसाद एवं 5 रुपये देकर आर्शीवाद लेती है। फिर उसके बाद सभी महिलाऐ एक दूसरे को प्रसाद तथा सिंदूर लगाकर एक दूसरे से आर्शीवाद लेते है। और फिर घाट पर गीत गाते चलते है।

छठ गीत

छठ गीत

केकर बड़े - 2 अखिंया। केकर लंबी - 2 केस
केकर बड़े - 2 अखिया। केकर लंबी - 2 केस ।..
केकर पिया परदेसिया। के घरे नाही आये। 2
छठी माई के बड़े - 2 अखिंया।
उनके लंबी - 2 केस - 2
उन्ही के पिया परदेसिया। के घरे नाही आये। - 2

गायत्री देई के बड़े - 2 अखियां।
उनके लंबी - लंबी केस। 2
उन्ही के पिया परदेसिया। के घरे नाही आये। 2

सिमा देई के बड़े - बड़े अखियां
उन्ही के पिया परदेसिया। के घरे नाही आये। 2

डिम्पल देई के बड़े - बड़े अखियां।
उनके लंबी - लंबी केस।
उन्ही के पिया परदेसिया। घरे नाही आये।....

छठ गीत

उगऽ हे सुरुज देव भोर भिनसरवा हो। अरघ केरे बेरवा हो। पूजन केरे बेरवा हो।....

बड़की पुकारे देव दुनु कर जोरवा। अरघ केरे बेरवा। पूजन केरे बेरवा हो।....

बांझिन पुकारे देव दुनु कर जोरवा। अरघ केरे बेरवा। पूजन केरे बेरवा हो।....

अन्हरा पुकारे देव दुनु कर जोरवा। अरघ केरे बेरवा। पूजन केरे बेरवा हो।....

निर्धन पुकारे देव दुनु कर जोरवा अरघ केरे बेरवा। पूजन केरे बेरवा हो।....

कोढ़िया पुकारे देव दुनु कर जोरवा। अरघ केरे बेरवा। पूजन केरे बेरवा हो।.....

अरघ देते

हुए महिलाएं

घाट पर पहुँच जाने के बाद वहां पर महिलाएं धूप एवं अगरबत्ती से पूजा करती है। और थोड़ा-थोड़ा जल एवं टीका लगाकर छठी मइया की पूजन करते है। पूजन करने के बाद सभी महिलाएं पानी में जाकर खड़ी हो जाती है। एक से डेढ़ घंटे तक महिलाएं पानी सुप एवं नारियल हाथ में लेकर खड़ी रहती है। जब तक सूरज देव ढल नहीं जाते, तब तक महिलाएं पानी में खड़ी रहती है। और छठी मईया से सभी अपनी-अपनी मन्नत मांगते है। और बाकी के लोग वहाँ पटाखे छोड़ते है। कई महिलाएं गीत गाती है। और घाट को अच्छी प्रकार से सजा दिया जाता है। [illegible] भी लगी होते है। शाम का अरघ देने के बाद पानी से निकल कर महिलाएं कपड़े बदल कर अपने अपने घर जाने की तैयारी करते है। फिर लौटते समय भी महिलाएं गीत गाते आती है। घर पहुँचने के बाद भी कम से कम दो या तीन गीत बैठकर महिलाएं गाती है। और सभी पुरुष बाजार जाकर सब्जीयां लेकर आते है। ताकि महिलाएं सुबह का अरघ देने के बाद घर आकर अपना व्रत खोलें। कढ़ी, चावल, पकौड़ी आदि चीज से महिलाएं अपना व्रत खोलती है।

हरियाणा

लड़की लड़के का विवाह

चिट्ठी

शादी के आठ दिन पहले लड़की वालो के घर से चिट्ठी लड़के वालो के घर भेजी जाती है उस चिट्ठी मे शादी का दिन, तारीख, समय आदि निश्चित किया जाता है और शाम के समय लड़के वालो के घर पर वह चिट्ठी पढ़ी जाती है और लोकगीत गाए जाते है

गीत →

बन्ना खेले गलियो मे उड़ावे पंतग, तेरा बाबुल बुलावे चलो
लाडले, तुझे बन्नी दिखावे कारो ना पंसद,
मेरी बन्नो की फोटो दिखाई नहीं, लाके कमरे मे मेरे --- ॥
सजाई नही
बन्ना खेले गलियो मे उड़ावे पंतग, तेरा चाचा बुलावे --- ॥
चलो लाडले, तुझे बन्नी दिखावे कारो ना पंसद
मेरी बन्नो की फोटो दिखाई नहीं, लाके कमरे मे मेरे --- ॥
सजाई नही
बन्ना खेले गलियो मे उड़ावे पंतग, तेरा फुंफड़ बुलावे --- ॥
चलो लाडले, तुझे बन्नी दिखावे कारो ना पंसद
मेरी बन्नो की फोटो दिखाई नहीं, लाके कमरे मे मेरे --- ॥
सजाई नही
--- ॥

गिदा →

विवाह से पहले पहले गिदा डाला जाता है गिद्दा मे सभी प्रकार के गीत गाए जाते है जिसमे बोलियाँ गाकर गिदा डाला जाता है जिसमे सभी प्रकार के नृत्य भी किये जाते है सभी गाँव - वासियो मिलकर गिदा डाला जाता है।

गीत →

मन्ने काला कोट सवाइयो रे, उसपे लाइलोन के बटन लगाइयो रे
मन्ने रोम - रोम रंग बरसे, सारी कॉलेज की लड़कियाँ तरसे
मन्ने तरसे को खूब तरसाइयो रे, अपने बाबा का बेटा
कहलाइयो रे
मन्ने काला कोट सवाइयो रे, उसपे लाइलोन के बटन लगाइयो
मन्ने रोम - रोम रंग बरसे, सारी कॉलेज की लड़कियाँ तरसे
मन्ने तरसे खूब तरसाइयो रे, अपने चाचा का बेटा कहलाइयो
रे
मन्ने काला कोट सवाइयो रे, उसपे लाइलोन के बटन लगाइयो
मन्ने रोम - रोम रंग बरसे, सारी कॉलेज की लड़कियाँ तरसे
मन्ने तरसे खूब तरसाइयो रे, अपने ताया का बेटा कहलाइयो
मन्ने काला कोट सवाइयो रे, उसपे लाइलोन के बटन लगाइयो रे
मन्ने रोम - रोम रंग बरसे, सारी कॉलेज की लड़कियाँ तरसे,
मन्ने तरसे खूब तरसाइयो रे, अपने मामा का बेटा कहलाइयो
मन्ने काला कोट सवाइयो रे, उसपे लाइलोन के बटन लगाइयो
मन्ने रोम - रोम रंग बरसे, सारी कॉलेज की लड़कियाँ तरसे,
मन्ने तरसे खूब तरसाइयो रे, अपने फुफड़ का बेटा कहलाइयो

मेंहदी

शादी के एक दिन पहले लड़के, लड़की को शगुन की मेंहदी लगाई जाती है मेंहदी लगाते समय लोकगीत गाए जाते है और अपने रीति-रिवाजो द्वारा कार्य किए जाते है। हमारे यहाँ पर मेंहदी से पहले सभी गाँव-वासियों को भी शगुन की मेंहदी दी जाती है।

गीत →

सोने की सुई, रेशम का धागा, लाडो कसीदा काड रही,
आदे-जाते राही पूछते, क्यो लाडो तु रो रही
बाबा मेरे ने ब्याह रचाया, मैं परदेशन हो रही ---II
सोने की सुई रेशम का धागा, लाडो कसीदा काड रही ---II
आदे-जाते राही पूछते, क्यो लाडो तु रो रही
बाबुल मेरे ने ब्याह रचाया, मैं परदेशन हो रही ---II
सोने की सुई रेशम का धागा, लाडो कसीदा काड रही ---II
आदे-जाते राही पूछते, क्यो लाडो तु रो रही
चाचा मेरे ने ब्याह रचाया, मैं परदेशन हो रही ---II
सोने की सुई रेशम का धागा, लाडो कसीदा काड रही ---II
आदे-जाते राही पूछते, क्यो लाडो तु रो रही
ताया मेरे ने ब्याह रचाया, मैं परदेशन हो रही ---II
सोने की सुई रेशम का धागा, लाडो कसीदा काड रही ---II
आदे-जाते राही पूछते, क्यो लाडो तु रो रही
मामा मेरे ने ब्याह रचाया, मैं परदेशन हो रही ---II

मेल

शादी के समय हमारे यहाँ खंड पाठ किया जाता है और मेल वाले दिन खंड पाठ का अंतिम दिन होता है और शाम के समय लड़की और लड़के वाले के घर नानाका मेल होता है दादाका मेल सभी नानाका मेल का बड़ी धूमधाम से स्वागत करते है और नानाका और दादा का मिलकर शादी की सभी रस्मे पूरी करते है

गीत →

सोरा जी ल्यावे ऊठनी, मन्ने प्यार काडनी आवे से ल्यावे ऊठनी, ---II
यो गडवा पीतल दा, इसमे प्यार सन्ना सन्न आवे से
ल्यावे ऊठनी
जेठ जी ल्यावे ऊठनी, मन्ने प्यार काडनी आवे से ल्यावे ऊठनी ---II
यो गडवा पीतल दा, इसमे प्यार सन्ना सन्न आवे से
ल्यावे ऊठनी
दयोरा जी ल्यावे ऊठनी, मन्ने प्यार काडनी आवे से ल्यावे ---II
ऊठनी
यो गडवा पीतल दा, इसमे प्यार सन्ना सन्न आवे से ---II
ल्यावे ऊठनी।

PAGE NO.
DATE

जागो

रात के समय जागो निकाली जाती है और सारे गाँव में जागो को लेकर घर - घर में जाकर नाचते हैं और तरह - तरह की बोलियाँ पाई जाती हैं और जिस - जिस घर में जागो जाती है वहाँ उस परिवार वाले उस जागो में पैसे डालते हैं और हमारे यहाँ जागो नानका वालों की तरफ से होती है।

गीत →

हे सरदारा साहो कारा पिंड दे लम्बरदारा
नी जागो आरिया शावा नी जागो वाड़या बल्ले नी जागो वाड़या
गली - गली चमकारा पई हुन जागो वाड़या, शावा नी जागो वाड़या
बल्ले नी जागो वाड़या
नचदी - गौंदी रौनक लौंदी गलियां नु सजौंदी वी जागो आइया,
शावा नी जागो वाड़या बल्ले नी जागो वाड़या
पिंडा विच रहे ना रुको खुलगे गली - गली विच ठेके
बंदा जेदे पासे देखे रंग गुलाबी हुंदा ए
हुन ता आपन पैसे सारा पिंड शराबी हुन्दा है ---- II
ना ही विवाहे मुन्दे ने ना ही गल कुवारे मुन्दे ने
हुन ता शान टली पिंडा विच ललकारे मुन्दे ने
दसो की होऊ घरदा बापु दिनो रात काम करदा ---- II
पुत्र बैंक तो लेके कर्जा चढदा मोटर कारा ते आज कल नेमी II
पतीरी हो गई बिल्कुल मौज बहारा ते
नी जागो आइया शावा नी जागो वाड़या बल्ले नी जागो वाड़या ---- II

PAGE NO.
DATE

गीत →

बालियां ता होड़या बाबुल पीढीया पा ----
वेडा आंगन होया परदेस वे
रख - रख बाबुल पर आपने तीं चली बेगाने देश वे बाबुल ---
करनी मैं बेटी परा ना हुए बाबुल ---
घर ते चल मेरिया गुडिया -----
वेडा नहीं छोडन ते चाह हुए
मेरी संग सहेली बाबुल बिछड़ मैंने बिछडे पैन - परा हुए ..
बाबुल ल
करनी मैं बेटी परा ना हुए बाबुल
माँ सुन्नी दिया अगियां पीज गई बापं रोए दरया होए ..
मेरा वीर रोए सारा जग रोए
मेरिया पाबियां दे मन जा हुए बाबुल ---
करनी मैं बेटी परा ना हुए बाबुल ---

पंजाब की वैवाहिक संस्कृति एवं परंपराएँ

मैं पंजाब के मोहाली जिले में रहने वाली हूँ। आज मैं आपके सामने पंजाब की शादी के बारे में प्रस्तुत करने जा रही हूँ। मैं आपको बताना चाहती हूँ कि हमारे पंजाब में शादियाँ किस प्रकार से की जाती हैं तथा उसमें कौन-कौन सी रस्में होती हैं और गीत गाए जाते हैं। शादी के 15-20 दिन पहले चिट्ठी लड़की वाले के घर से लड़के वालों को भेजी जाती है, जिसमें शादी की तारीख, स्थान तथा कार्यक्रम के बारे में लिखा जाता है। शादी के सात दिन पहले यदि लड़की की शादी हो तो सुहाग यदि लड़के की शादी हो तो घोड़ियाँ गाई जाती हैं। शादी के तीन दिन पहले श्री अखण्ड पाठ साहिब शुरू किया जाता है। शादी के तीन दिन पहले वटना की रस्म होती है और मेंहदी की रस्म होती है। शादी के एक दिन पहले सुबह के समय श्री अखंड पाठ साहिब की समाप्ति होती है। शाम के समय नानका मेल होता है तथा उसके द्वारा रस्में की जाती हैं। उसके बाद रात के समय जागो निकाली जाती है। दूसरे दिन लड़की की शादी में सुबह बारात का स्वागत होता है और लड़के की शादी में बारात को रवाना की जाती है। उसके बाद गुरुद्वारा साहिब में वर वधू की लावां करवाई जाती है, उसके बाद अन्य सभी रस्में की जाती हैं और शाम के समय डोली की विदाई की जाती है तथा लड़के वाले लड़की का स्वागत करते हैं।

चिट्ठी भेजना

चिट्ठी भेजने की रस्म इसलिए की जाती है कि उस चिट्ठी के माध्यम से लड़की वालों की तरफ से लड़के व उसके परिवार को संदेश भेजा जाता है, चिट्ठी भेजने के बाद ही विवाह की सभी रस्में शुरू होती हैं। चिट्ठी में विवाह की तिथि, दिन तथा लड़की और लड़के का नाम लिखा जाता है, यह शादी के 15-20 दिन पहले भेजी जाती है।

चिट्ठी पकड़ना

चिट्ठी पकड़ने का अर्थ है कि लड़की वालों के घर से जो चिट्ठी लिखी जाती है उसे कोई भी व्यक्ति लड़की वालों के घर से वह चिट्ठी तथा शगुन लड़के वालों के घर पर लेकर जाता है। तथा उसके बाद उस चिट्ठी को पकड़ा जाता है तथा उसमें शादी की तारीख, दिन आदि को सभी कुड़मों पर को बताया जाता है। यह शादी के 15-20 पहले पकड़ी है।

सुहाग

सुहाग लड़की वालों के घर पर शाम के समय शादी के 6-7 दिन पहले गाया जाता है। सुहाग इस लिए गाये जाते हैं कि लड़की ने किसी के घर को जाना होती है।

घोड़ियां

घोड़ियां लड़के वालों के घर पर शाम के वक्त शादी के 6-7 दिन पहले गाना शुरू कर देते हैं। घोड़ियां एक कुड़ी के माध्यम से गायी जाती हैं। इस समय रात को ढोलक बजाया जाता है तथा स्त्रीयां नाच-गाना करती हैं, तथा खुशी मनाती हैं।

वटना

वटना लगाने की रस्म एक शगुन के तौर पर की जाती है। यह रस्म शादी के तीन दिन पहले की जाती है। इसमें लड़की तथा लड़के दोनों को वटना लगाया जाता है, जिसको हम हल्दी बोलते हैं। पुराने समय में शरीर को गोरा करने के लिए वटना लगाया जाता था।

मेंहदी

मेंहदी लगाने की रस्म एक शगुन होता है। मेंहदी सुहाग की निशानी होती है। लड़की अपने हाथों पर अपने होने वाले पति का नाम लिखवाती है तथा उसके नाम की मेंहदी लगवाती है। लड़के भी शगुन के तौर पर अपने हाथों पर थोड़ी सी मेंहदी लगवाते हैं। यह रस्म शादी के 2 दिन पहले होती है।

Date
Page

दादका मेल

जो लड़की और लड़के के जो परिवार होता है उसको दादका मेल कहा जाता है। शादी के एक दिन पहले सभी परिवार वाले मिलकर खुशी मनाते हैं तथा विवाह की रस्में करते हैं। शाम के समय लड़की तथा लड़के के नानका परिवार आता है तथा दादका मेल मिलकर उसका स्वागत करता है।

नानका मेल

लड़की और लड़के के जो नानका परिवार होते हैं उसको नानका मेल कहा जाता है। शादी के एक दिन पहले वह लड़की तथा लड़के वाले के घर जाते हैं। तथा वह लड़की लड़के तथा उनके परिवार वालों के लिए शगुन लेकर जाते हैं। नानका मेल तथा दादका मेल मिलकर खुशी मनाते हैं तथा गीत एक-दूसरे के लिए गीत गाते हैं। जिसको सिठणियां भी बोला जाता है।

जागो

जागो की रस्म शादी के एक दिन पहले रात को की जाती है, उसमें घर के ऊपर जागो को उठाकर सारे गाँव की गलियों में घुमा जाता है। तथा ढोल बजाकर नाच गाना होता है, तथा जागो को लेकर लोगों के घर-घर में जाया जाता है।

Date
Page

बरात चढ़ना

बरात चढ़ने की रस्म लड़के वाले द्वारा की जाती है। जिस दिन शादी होती है लड़के के परिवार वाले सुबह के समय लड़के को तैयार करके पूरे रीति रिवाज तथा नाच गाने के साथ लड़के को शादी करने के लिए भेजा जाता है। लड़के की बहनें उसको सेहरा लगाती हैं। लड़के की माँ लड़के को मिठाई खिलाकर तथा तेल को गाड़ी के आगे गिराने की रस्म करती है।

विदाई

शादी के दिन शाम के समय लड़की की विदाई कर दी जाती है, लड़की चावल की मुट्ठी भरकर अपने घर के अंदर गिराती है जिसका अर्थ है कि वह लड़की चाहती है कि उसके पेके परिवार में हमेशा खुशी रहे तथा उनके घर में किसी भी प्रकार की कोई कमी न हो।

पाणी वारना

पानी वारने की रस्म लड़के वाले के घर पर की जाती है, जब लड़का शादी करके अपने घर आ जाता है तो लड़के की माँ लड़की तथा लड़के दोनों के सिर के ऊपर से पानी को वार कर पीती है। लड़का उसको पानी पीने से रोकता

साहे वाले

चिट्ठी तोरना

जीवे - जीवे वीरिया जीवे
तेरे वेडे मोड़ा मारिया - ②
तेरे सिर ते करा सरदारी
वीरा वे मरवे कलिया
तेरे सिर ते करा सरदारी
वीरा वे मरवे पालिया ।

सुन हो बीबी दे वादये
पोतियां दुरे ना व्याये वे
वे दुरा दी वाट करारी आ
सापो तुरया ना जावे
वे हाड महीने वीया दुपा
पैरी पै जांदे छाले
वे सोण महीने दा गारा
सापो गुडया ना ज़ावे ।

हाथ मा सुई वट मा तागा,
बैठ कसीदा कड रही वे
आंदे जांदे राही पुछदे
तु क्यूँ हाडो रो रही वे.
वावल मेरे ने काज रचाया
मैं परदेसन हो रही वे

चिट्ठी पकड़ना

कौडी दे नाल पीन पीना
ला रुमाल वे
कौडी ना मजदी वे वीरा
वावल दे नाल वे
कौडी दे नाल वीर वीरां
ला रुमाल वे
कौडी ना मजदी वे वीरा
मामे दे नाल वे ..

इदर कणका ओदर कणका
विच कणका दे राह - ②
वे वीर गहना कराये
वोवे पैण पता
वे वीर गहना करांगे
होरा कुड़िया दे दो - दो वीरे - ②
मेरा वीरा इक कुड़िये
ओ वी दसवे गुरा दा सिक्ख कुड़िये - ②

1) कौडी दे नाल पीन पीना
ला रुम

3) हाथ रुमाला दा जोड़ा
चाल मकीना दी आवे
सारा दुध्ये पढाले
पुत मेरा जी आवे

Date ____
Page ____

सुहाग

सुत वी जाये मेरिये
मेरे बावल नु समझा
तीयां ना वडियां हो गईयां
कोई हसां दे लड ना
सुत वी जाये मेरिये व
उ नदडे बोल ना बोल
जहां कटे मेरे पास बरस
उथे छे महीने होर
बारा बरस मेरे ना कटे
मेरे बाबल नाल प्यार
हुन ना कटदी ए लकडी
मेरा अंजल होया क्वार

हरीये नी रस परिये खजुरे
किन वर टोले अदुरे
दादा नी मेरा देश दा राजा
ओन वर टोले अधुरे
हरीये नी रस परिये खजुरे
किन वर टोले अदुरे
चाचा नी मेरा देश दा राजा
ओन वर टोले अधुरे,
हरीये नी रस परिये खजुरे
किन कर टोले अदुरे
मामा नी मेरा देश दा राजा
ओन वर टोले अधुरे,

Date ____
Page ____

हाथ मा सुई वट मा तग्गा
बैठ कसीदा कड रही वे
आवे जांदे राही पुछदे
तु क्यूँ लाडो रो रही वे
बाबल मेरे ने काज रचाया
मैं परदेसन हो रही वे...

हाथ मा सुई वट मा तागा
बैठ कसीदा कड रही वे
आवे जांदे राही पुछदे
तु क्यूँ लाडो रो रही वे
बाबे मेरे ने काज रचाया
मैं परदेसन हो रही वे.

लाडो तेरी शादी दे
छापे गए अखबार
लाडो तेरी शादी दे
दिन रै गे दो चार
लाडो तेरा बाबल वे
दिन सोवे ना रात
लाडो तेरी शादी दे
छापे गए अखबार
लाडो तेरी शादी दे
दिन रै गे दो चार,

(कोडिया)

वीरा नदी दे कनारे रखो खड्या - ②
पैणो बापु मेरे नु मैं डीक दा - ②
बापु नक कडी तुसी आ जाना - ②
बापु जना दे हाजर हो जाना - ②

हाथ रुमाला दा जोड़ा
नाल शकीना दी आवे - ②
मावां दुरो फगाने
पुत मेरा जी आवे - ②

गड्डी तेरी वीरना
स्टील दी बनी - ②
वीच - बैजा वीरना
वे शकीन बनके - ②

कौडी दे गल बीच वीरा
हरा रुमाल वे
कौडी ना सजदी वे वीरा
बावल दे नाल वे - ②
कौडी दे गल बीच वीरा
हरा रुमाल वे
कौडी ना सजदी वे वीरा
चाचे दे नाल वे - ②

वटना

मेरे पटके ना खोलो महेलडियो
मेरे पटके ना खोलो महेलडियो
अम्मां राणी दे गुंदे महेलडियो
अम्मा राणी दे गुंदे महेलडियो

(2) दादी तेरी वटणा लगावे - ②
दादे नु चड्या चा
अज दिन मसा लिया
मसा लिया मेरे वाहेगुरु
अज दिन मसा लिया।

(3) जे वटणा तेरी पैणा लगावण
जे वटणा तेरी पैणा लगावण
लड्डुया वाला शगन मनावण
वटणा लगाणा दा चाअ
नी पैणे तैनु वटणा लगाणा दा चाअ।

(4) तु ने तकिया लोड्या पीलिया नी कोई आजत हो गया
नी माये मेरीये
....
परदेशा नी
रब है वे बावल
है रब्ब ही वे नी नी चली
बगानडे देश नी मा आपने मेरेया।

मेंहदी

अनो नी आपो नी लाके
शगना दी मेंहदी - ②
तीया कुड़ियाँ होइया
कुंजा तो डारा होईया
बाबल मेरे तु अड़ियो
नींद ना पैंदी
आयो नी आवो नी लायो
शगना दी मेंहदी - ②

लहिया होइया पीहिया
नी कोई आगल होइया
नी माये मेरीये ....
परदेशा नी
रब्ब है वे बाबल
है रब्ब है वे नी पही
वगानड़े देश वे

तु मेंहदी ला
जीवन जोगिया
मेंहदी ला के
शगन मना - ②

दादका मेल सिठणियाँ

खादीया सी रोटिया
जमिया सी रोटिया
खादीया सी रोटिया
हो गईया मोटिया
हुण उठिया ना जांदे ना
जसप्रीत तेरी दादकिया

2) दादकिया नु वेख के असी
हीरो लड़ा लैणा
दादकिया नु वेख के असी
हीरो लड़ा लैणा
गुस्सा ना करियो दादकियो
बस इको, इको जुट लैणा

(3) दादकियो खड़े ने खड़ोता
घोड़ा हाक चाक दू - ②
नाल पैणा नु खड़ा हो
वे हडोता लाणा दू - ②
ओ ना पतली पतंग
वे पिंयाहे फास दू - ②
ओनु पतिया सवाहो
वे सयाना काट दू - ②

नानका मेल सिठणियाँ

नानके ओस पींडो आये
जीये नुत वी ना
इना दी बांदर वारगी ② बुधे
ऊपर रूप वी ना। ②

) व नानकियो खड़े ने खड़ोता
घोड़ा हाक चाक दू - ②
नाल पैणा नु खड़ा हो
वे हडोता हाणा दू - ②
ओ ना पतली पतंग
वे वियाहे फास दू - ②
ओनु पतियां सवाहो
वे सयाना काट दू - ②

3) छज ओहे छाननी
बरात ओहे टोकरे वे
नानकिया दा मेल आया
रज दी ना कोई वे।
छज ओते छाननी
बरात ओहे पुड़िया
नानकिया दा मेल आया
सब रना चुचियां

Date
Page

जागो

गवाढियों, जागा दे के जुत्ते - ②
आप ता बता कुत्ता है गया
वती तु ते मे कुत्ते
गवाढियो, जागा दे के जुत्ते - ②

(2) जागला वाली रात नानी जागदी फिरे
ओ जागला वाली रात नानी जागदी फिरे,
जागो चक के गिद्दे दे विच नचदी फिरे
ओ जागो चक के गिद्दे दे विच नचदी फिरे,
ओ जागो चक के मामीरा मकला करा छड रंजरा
दस तेरा मेरा, मेरा तेरा की झगड़ा ए - ②

(3) साडे वीरे दा विआ
नाहु गेडे - गेडे चाआ
अजी ता सोर जावा गे
ओसी चल वरगी फजाई
किआ के लिया गे।

(4) मामी नच्चे जागो ते
झाराडा पा के - ②
मामा पावे पैलिया
दारु दा पैग ला के - ②

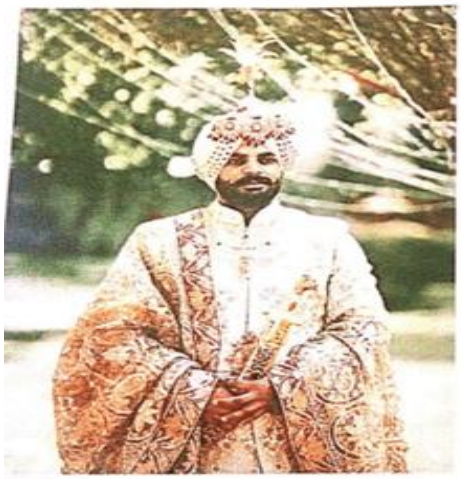

Date
Page

बारात चढ़ना

(1) जदो चड़िया वीरा घोड़ी ते
तेरे नाल यारा दी जोड़ी वे
हटके वे बाह जोडे
सोहिया वीरा मैं तैनु घोड़ी चढ़दी या ②

(2) गड़ी तेरी वीर वा
वे कटीह दी बनी
वीच - बैठा वीरना
वे झकीत वानके - ②

(3) घर दिदे वे भरोसे छड चलिया वे वीरा - ②
घर पैणा दे भरोसे छड चलिया वे वीरा - ②
ओ ता खाऊ गी लटाउ मंजे तोड़ु गी वीरा ②

(4) घोड़ी ते मेरा सोना वीर चड़े
पैया सुहागण तेरे आगन खड़े - ②
घोड़ी ते मेरा सोना वीर चड़े
अम्ना सुहागण तेरे दवाल खड़े - ③

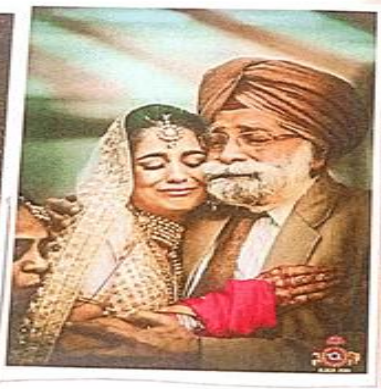

Date ______
Page ______

विदाई

(1) सरसों बीजी बावल जी बीजी लंबे-लंबे खेत
सरसों बीजी बावल जी बीजी लंबे-लंबे खेत,
अब मैं चली बावल जी तेरे देसों परदेस
अब मैं चली बावल जी तेरे देसों परदेस,
लिखे असी लेख नी किसे लिखे तेरे लेख
लिखे असी लेख नी किसे लिखे तेरे लेख,
पेके असी बावल जी सोहणे लिखे मेरे लेख
पेके असी बावल जी सोहणे लिखे मेरे लेख,
सरसों बीजी बावल जी बीजी लंबे-लंबे खेत -

(2) मेरे बागा दी कोयल कहा चली वे
मेरे बागा दी कोयल कहा चली वे
बावल तरनी दे बोल पगा चली वे
बावल तरनी दे बोल पगा चली वे.

मेरे बागा दी कोयल कहा चली वे -(2)
अब दादे तरनी दे बोल पगा चली वे .(2)

(3) हाय वे मेरेया डाडेया क्या किता जुलिया
किता ना वे ते जुलिया हाय ....
होते बावल तेरे महिला पिंघे,
संतरंगिया कबूतर बोले हाय .....

Date ______
Page ______

पाणी वारना

(1) पाणी वार चले दिन माये
बनी-बना बाहर खड़े
सुखा-सुखदी तु ए दिन आया
बनी-बना बाहर खड़े -(2)

(2) हाथ रुमाल दा जोड़ा
रात शकीला दी आवे
जा के दूरो पताले
दूल मेरा जी आवे -(2)

(3) चल वरगी भरजाई मेरा वीर किता वे लियाया
हथी ओदे छापा छल्ले बाही चूड़ा पाया
खड़-खड़ देखण लोक बार चो लियांदी जदो तक
पीहे-पीहे नी मां जोड़ी नो पाणी वार के
पीहे-पीहे नी मां जोड़ी नो पाणी वार के

NAME - VENIKA
Class - B.A 3rd Year
RollNO- 22407
SUBJECT - MUSIC ASSIGNMENT
SUBMINT BY - Dr. NITI GUPtA

ASSINMENT TITLE
कुल्हाड़ीवाला क्षेत्र में शादी में गाए जाने वाले लोकगीत

ASSINGMENT

SUBJECT : Music (GE)
COURSE CODE : MUSA 307 (TH) (GE)
Roll No : 22409, 22418
Submitted to DR. NITI GUPTA MAM
Submitted By SUNIDHI AND ANITA

ASSINGMENT TOPIC : 16 SANSKAR (सोलह संस्कार)

THANK

YOU